Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا

(सूरत अन्निसा आयत :138)

अनुवाद: अवश्य वे लोग जो ईमान लाए फिर इन्कार कर दिया फिर ईमान लाए फिर कुफ्र किया फिर कुफ्र में बढ़ते चले गए, अल्लाह ऐसा नहीं कि इन्हें माफ कर दे और उन्हें सच्चाई की हिदायत दे।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 6

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक-4-5

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

14-21 जमादी सानी 1442 हिज्री कमरी 28 सुलेह,4 तब्लीग़ 1400 हिज्री शम्सी 28 जनवरी,4 फरवरी 2021 ई.

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आपस में भाईचारा और मुहब्बत को पैदा करो और दरिंदगी और मतभेद को छोड़ दो। प्रत्येक प्रकार की सुस्ती और उपहास से पूर्ण रूप से दूर हो जाओ, क्योंकि उपहास इन्सान के दिल को सच्चाई से दूर करके कहीं का कहीं पहुंचा देता है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

अपनी ज़िन्दगी में परिवर्तन पैदा करो।

मूल बात यह है कि ख़ुदा जो चाहता है करता है। वीराना को आबादी और बड़ी आबादी को वीराना बना देता है। बाबुल को क्या किया? जहां इन्सान का मन्सूबा था कि आबाद हो वहां वीराना हुआ और उल्लुओं का निवास बना और जहां इन्सान चाहता था कि वीराना हो वह सारी दुनिया के लौटने का स्थान हुआ। अत: ख़ूब याद रखो कि दवा और चेष्टा पर ख़ुदा तआला को छोड़कर भरोसा करना मूर्खता है। ऐसी ज़िन्दगी चाहिए जो बिल्कुल नई हो। इस्तिग़फ़ार की प्रचुरता हो। जिनको बहुत प्रचुरता कठिन हैं उनको अधिक डरना चाहिए। नौकरी पेशा लोगों के अक्सर फ़राइज़ पूरे नहीं होते हैं। अत: कई बार ज़ुहर और अस्र की जमा और मग़रिब और इशा की जमा करना जायज़ है। मैं जानता हूँ कि हुक्काम से भी यदि नमाज़ के लिए पूछें तो आज्ञा दे देते हैं। और उच्च हुक्काम के अधीन अफ़सरों को हिदायतें होती हैं। नमाज़ के छोड़ने में ऐसे व्यर्थ के बहाने अपने नफ़्स के कच्चेपन के और कुछ नहीं। बन्दों के अधिकार और अल्लाह के अधिकारों मैं अत्याचार न करो। अपने फ़राइज़ मंसबी पूरे करो गर्वनमेंट पर एक सैकण्ड के लिए भी कुधारणा न करो। क्या तुम नहीं जानते कि सिक्खों के ज़माना में क्या अवस्था थी? मस्जिदों में अज़ान स्थगित हो गई थी। गाय के थोड़े से गोश्त पर सख़्त कष्ट और बहुत अत्याचार होते थे। अत: अल्लाह तआला दूर से इस सल्तनत को लाया जिससे हमने लाभ उठाया। अमन से अपने मज़हबी कर्तव्य अदा कर रहे हैं अत: कितना शुक्र हम को इस गर्वनमेंट का करना चाहिए। ख़ूब याद रखो कि जो इन्सान का शुक्र नहीं करता वह ख़ुदा का भी नहीं करता। यह नियम है कि यदि इन्सान किसी अंग से काम न ले तो बेकार हो जाए। कहते हैं आँख को चालीस दिन बंद रखें तो अंधी हो जाए। इस लिए मैं तुमको ज़ोरदार नसीहत से कहता हूँ कि गर्वनमेंट के उपकार हम पर बहुत हैं। किस क़दर हक़ायक़ और मआरिफ़ की किताबें कहाँ कहाँ से आती हैं। आज़ादी से हमने लाभ उठाया। मज़हब पर हमले हुए और मुश्किलें आईं। हमने ग़ौर किया और फ़िक्र की तो अल्लाह तआला ने وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (अलअनकबूत:70)वादा के अनुसार हम पर रहस्य और सच्चाई के मार्ग खोले। इसी दृष्टि से गर्वनमेंट भी इन मआरिफ़ के खुलने का एक कारण है। अत: अन्त में मैं फिर कहना चाहता हूँ कि ख़ुदा तआला से सच्चा रिश्ता स्थापित करो और गर्वनमेंट को कुधारणा से न देखो। बल्कि उसकी हिदायतों की पूर्णता करो। और इस को मदद दो। इसी में से।

16 मई 1898 ई तुम ख़ुदा के प्रियों में शामिल हो जाओ।

दिन बहुत ही नाज़ुक हैं। अल्लाह तआला के ग़ज़ब से सबको डरना चाहिए। अल्लाह तआला किसी की परवाह नहीं करता नेक बंदों के अतिरिक्त। आपस में भाईचारा और मुहब्बत को पैदा करो और दरिंदगी और मतभेद को छोड़ दो। प्रत्येक प्रकार की सुस्ती और उपहास से पूर्ण रूप से किनारे हो जाओ, क्योंकि उपहास इन्सान के दिल को सच्चाई से दूर करके कहीं का कहीं पहुंचा देता है। आपस में एक दूसरे के साथ सम्मान से व्यवहार करो। हर एक अपने आराम पर अपने भाई के आराम को प्राथमिकता दे। अल्लाह तआला से एक सच्ची सुलह पैदा करलो और इस के आज्ञापालन में वापस आ जाओ। अल्लाह तआला का ग़ज़ब ज़मीन पर नाज़िल हो रहा है और इससे बचने वाले वही हैं जो सम्पूर्ण रूप से अपने सारे

शेष पृष्ठ 12 पर

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहत

(1038) हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद जहनी रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुदैबिया में हमें सुबह की नमाज़ बारिश के बाद पढ़ाई जो रात से शुरू थी। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो आप ने लोगों की तरफ़ ध्यान देते हुए और फ़रमाया क्या तुम जानते हो तुम्हारे रब ने क्या फ़रमाया है? उन्होंने कहा: अल्लाह और उसका रसूल बेहतर जानते हैं। (आप ने फ़रमाया) अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: आज सुबह मेरे बन्दों में से कोई मेरा मोमिन है और कोई (मेरा) काफ़िर। अत: जिस ने कहा: हम पर अल्लाह के फ़ज़ल और रहम से बारिश हुई तो वह मेरा मोमिन है और सितारों का मुन्किर और जिसने कहा कि अमुक़ अमुक़ सितारे के अमुक़ अमुक़ जगह आने से हम पर बारिश हुई है तो वह मेरा इन्कार करने वाला है और सितारों का मोमिन।

(1039) हज़रत इब्ने उमर रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ग़ैब की चाबियाँ पाँच हैं, सिर्फ अल्लाह उन्हें जानता है। कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा। और कोई नहीं जानता गर्भों में क्या है। और कोई जान नहीं जानती कि वह कल क्या कमाएगी। और कोई जान नहीं जानती कि वह किस देश में मरेगा। और कोई नहीं जानता मींह कब बरसेगा।

(सही बुख़ारी, किताबुल इस्तफताअ , प्रकाशन कादियान 2006 ई)

☆ ☆ ☆ ☆

कुफ़्फ़ार को इस पर आश्चर्य था कि उन्हीं में से एक आदमी पर किस तरह वह्यी आ गई यही हाल आजकल बहुत से मुस्लमानों का है वे भी कहते हैं कि हज़रत ईसा (अ) ही आसमान से आकर हमें अपमान और पतन से निकालेंगे हम में से ऐसा व्यक्ति नहीं पैदा हो सकता जो इलाज करे।

हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ यूनुस आयत 4 की तफ़सीर में फ़रमाते हैं

"कुफ़्फ़ार को इस पर आश्चर्य था कि उन्हीं में से एक आदमी पर किस तरह वह्यी आ गई। गिरी हुई क़ौमों में यह एहसास हमेशा ही हुआ करता है कि हम में से बड़े आदमी नहीं पैदा हो सकते। यद्यपि कुफ़्फ़ार अपनी हालत से ऐसे निराश हो गए थे कि वह यक़ीन ही नहीं कर सकते थे कि उनका ईलाज उनके अन्दर मौजूद है। उनका विचार था कि उनको बढ़ाने और तरक़्क़ी देने और उनका ईलाज करने के लिए बाहर से किसी को आना चाहिए। यही हाल आजकल बहुत से मुसलमानों का है। वे भी कहते हैं कि हज़रत ईसा (अ) ही आसमान से आकर हमें अपमान और पतन से निकालेंगे। हम में से ऐसा शख़्स नहीं पैदा हो सकता जो हमारा इलाज करे। इस बात में उन्हें पहली क़ौमों से कितनी समानता है वही निराशा है और वही

शेष पृष्ठ 16 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अली रज़ियल्लाहु अन्हु की तारीफ़ की तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमने फ़रमाया कि अली रज़ियल्लाहु अन्हु मुझ से हैं और मैं अली रज़ियल्लाहु अन्हु से हूँ, इस पर जिब्राइल अलैहिस्सलम ने कहा मैं आप दोनों में हूँ

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद और दामाद अब्बू तुराब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु अल् मुर्तज़ा के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने .....यह ऐलान किया कि मैं इस्लाम का काला झंडा आज उसके हाथ में दूँगा जिसको ख़ुदा और उस का रसूल और मुस्लमान प्यार करते हैं

ख़ुदा तआला ने इस क़िला की फ़तह उसके हाथ पर मुक़द्दर की है, इसके बाद दूसरी सुबह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और झंडा उनके सपुर्द किया जिन्हों ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ौज को साथ लेकर क़िले पर आक्रमण किया, इस के अतिरिक्त कि यहूदी क़िला बंद थे अल्लाह तआला ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को उस दिन ऐसी क़ुव्वत बख़शी कि शाम से पहले पहले क़िला फ़तह हो गया

जंग तबूक रजब 9 हिज्री के समय पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीने में अपना स्थानापन्न निर्धारित फ़रमाया

रशीद अहमद साहिब इब्न मुहम्मद अब्दुल्लाह साहिब रब्वाह का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

अल-जज़ाइर और पाकिस्तान में अहमदियों के अत्यधिक विरोध को दृष्टिगत रखते हुए विशेष दुआ की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 11 दिसम्बर 2020 ई 11 फतह 1399 हिज्री शम्सी स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तआला अन्हु का वर्णन चल रहा था। आज भी और आगे भी कुछ ख़ुत्बात में वही जारी रहेगा। इंशा अल्लाह।

उहद के युद्ध के समय पर जब इब्ने कमआ ने हज़रत मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया तो उसने यह गुमान किया कि उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को शहीद कर दिया है। इसलिए वह क़ुरैश की ओर लौटा और कहने लगा कि मैंने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)को क़तल कर दिया है। जब हज़रत मसअब शहीद हुए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने झंडा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के सपुर्द किया। इसलिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और बाक़ी मुस्लमानों ने लड़ाई की।

(अल् सीरतुल नब्विया ले इब्ने हिशाम, पृष्ठ 529 उहद का युद्ध, मक़तल मसअब बिन उमेर प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया 2001 ई)

एक रिवायत में आता है कि उहद के युद्ध के समय पर मुशरिकीन का झंडा उठाने वाले तलहा बिन अबू तल्हा ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को ललकारा। उन्होंने आगे बढ़कर ऐसा वार किया कि वह ज़मीन पर ढेर हो कर तड़पने लगा। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक के बाद एक कुफ़्फ़ार के अलंबरदारों को तलवार के नीचे किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुफ़्फ़ार की एक जमाअत देखकर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को उन पर आक्रमण करने का ईरशाद फ़रमाया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अम्र बिन अबदुल्लाह जमही को क़तल कर के उन्हें मुंतशिर कर दिया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुफ़्फ़ार के दूसरे दस्ता पर आक्रमण करने का हुक्म दिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने शेबा बिन मालिक को हलाक किया तो हज़रत जिब्राइल अलैहिस्सलम ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! निसंदेह यह हमदर्दी के योग्य है, अर्थात हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) मुझसे है और मैं अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) से हूँ। तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा कि मैं आप दोनों में से हूँ।

(शरह अल्लामा ज़र्कानी अला मुवाहिबु दुनिया, भाग 2 पृष्ठ 409 बाब उहद का युद्ध, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1996ई)(तारीख़ अलतिबरी, भाग 3 पृष्ठ 68 बाब उहद का युद्ध , दारुल फ़िक्र प्रकाशित अलतोज़ी बेरूत 2002 ई)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि उहद के युद्ध में जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट से लोग हट गए तो मैंने शुहदा की लाशों में देखना शुरू किया तो उनमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नहीं पाया। तब मैंने कहा ख़ुदा की क़सम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भागने वाले नहीं थे और न ही मैंने आप अलैहिस्सलाम को शुहदा में पाया है लेकिन अल्लाह हम से नाराज़ हुआ और उसने अपने नबी को उठा लिया है अत: अब मेरे लिए भलाई यही है कि मैं लड़ूं यहां तक कि क़तल कर दिया जाऊं। फिर मैंने अपनी तलवार की मियान तोड़ डाली और कुफ़्फ़ार पर आक्रमण किया। वे इधर उधर मुंतशिर हो गए तो क्या देखता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके मध्य हैं।(उसोदुल ग़ाबा अल् मरेफ़तिल सहाबा जेल में , भाग 4 पृष्ठ 94 वर्णन अली बिन अबी तालिब, दारुल फ़िक्र प्रकाशित तोज़ी बेरूत 2003 ई)

यह इशक़-और-वफ़ा की वह दास्तान है जो बचपन के समय से शुरू हुई और हर समय पर अपना जलवा दिखाती रही। उहद के युद्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जो घाव लगे इस हवाले से एक रिवायत है कि हज़रत सहल बिन साअद रज़ियल्लाहु अन्हु से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घाव के विषय में पूछा गया तो उन्होंने कहा मुझसे पूछते हो तो अल्लाह की क़सम मैं ख़ूब जानता हूँ कि कौन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का घाव धो रहा था। अर्थात यह दृश्य सब कुछ मेरी आँखों के सामने है, और कौन पानी डाल रहा था और क्या दवा लगाई गई थी। हज़रत सहल रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमकी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा घाव धो रही थीं और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ढाल में से पानी डाल रहे थे। जब हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने देखा कि पानी ख़ून को और निकाल रहा है तो उन्होंने बोरिया का एक टुकड़ा लिया और उसको जलाया और उनके साथ चिपका दिया। इस से ख़ून रुक गया और उस दिन आप का सामने वाला दाँत भी टूट गया था और आप का चेहरा ज़ख़मी हो गया था और आप का कवच आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिर पर टूट गया था।

(सही अल् बुख़ारी, किताब अल्मग़ाज़ी , बाब मा असाब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यौमे उहद ,हदीस नम्बर 4075)

हज़रत सईद बिन मुसय्यब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उहद के युद्ध में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को सोला घाव लगे थे।

(उसोदुल ग़ाबा अल् मरेफ़तिल सहाबा ले इब्ने जैल ,भाग 4 पृष्ठ 93 ज़िक्र

अली बिन अबी तालिब, दारुल फ़िक्र बेरूत 2003ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यह विषय वर्णन फ़र्मा रहे थे कि मुश्किलों के नीचे बरकतों के खज़ाने छुपाए होते हैं तो यह मज़मून वर्णन फ़रमाते हुए आप ने यह वर्णन फ़रमाया कि "हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उहद से वापस आकर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को अपनी तलवार दी और कहा उस को धो दो। आज इस तलवार ने बड़ा काम किया है। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की यह बात सुन रहे थे। फ़रमाया : अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) तुम्हारी ही तलवार ने काम नहीं किया और भी बहुत से तुम्हारे भाई हैं जिनकी तलवारों ने जोहर दिखाए हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने छ: सात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम लेते हुए फ़रमाया उनकी तलवारें तुम्हारी तलवार से कम तो न थीं।"

(मुश्किलात के नीचे बरकतों के खज़ाने छुपाए होते हैं, अनवारुल ऊलूम,भाग 19 पृष्ठ 59)

और फिर उन्ही मुसीबतों में से गुज़रते हुए उन लोगों को अंतत: विजय प्राप्त हुई।

ख़ंदक़ का युद्ध शवाल पाँच हिज्री में हुआ है। उस समय पर कुफ़्फ़ार के लश्कर ने जब मदीना का घिराव किया हुआ था तो उनके सरदारों ने इस बात पर सहमती की कि मिलकर आक्रमण किया जाए। वे ख़ंदक़ में कोई ऐसा तंग स्थान तलाश करने लगे जहां से वे अपने घुड़सवार नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के अस्हाब तक पहुंचा दें परन्तु उन्हें कोई स्थान न मिला। उन्होंने कहा कि यह ऐसी तदबीर है जिसको अरब में आज तक किसी ने नहीं किया था। उनसे कहा गया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ एक फ़ारसी व्यक्ति है जिस ने आप अलैहिस्सलाम को इस बात का मश्वरा दिया है। उन्होंने कहा यह उसी की तदबीर है अर्थात कुफ़्फ़ार ने कहा। फिर वह लोग ऐसे तंग स्थान पर पहुंचे जिस से मुस्लमान ग़ाफ़िल थे तो अकरमा बिन अबुजहल, नौफ़ल बिन अबदुल्लाह और ज़ुरार बिन खत्ताब, वर्हुबेरह बिन अबु वाह्बा और अम्र बिन अब्दे वदूद ने इस स्थान से ख़ंदक़ को पार किया। अम्र बिन अबदेवुद्द मुक़ाबले के लिए लिए बुलाते हुए यह शेअर पढ़ने लगा कि

وَلَقَدْ بَحِحْتُ مِنَ النِّدَاءِ لِجَمْعِهِمْ هَلْ مِنْ مُبَارِزْ

अर्थात उनकी जमाअत को आवाज़ देते-देते स्वयं मेरी आवाज़ बैठ गई है कि है कोई जो मुक़ाबले के लिए निकले। इस के उत्तर में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह अशआर कहे।

لَا تَعْجَلَنَّ فَقَدْ اَتَاكَ مُجِيْبُ صَوْتِكَ غَيْرُ عَاجِزْ
فِيْ نِيَّةٍ وَبَصِيْرَةٍ وَالصِّدْقُ مَنْجِيْ كُلِّ فَائِزْ
اِنِّيْ لَاَرْجُوْ اَنْ اُقِيْمَ عَلَيْكَ نَائِحَةَ الْجَنَائِزْ
مِنْ ضَرْبَةٍ نَجْلَاءَ يَبْقَى ذِكْرُهَا عِنْدَ الْهَزَاهِزْ

तुम कदापि जल्दी न करो। तुम्हारी आवाज़ का उत्तर देने वाला तुम्हारे निकट आ गया है जो बेबसी और कमज़ोरी का इज़हार करने वाला नहीं। मज़बूत इरादे और पूर्ण विवेक के साथ और मैदान में साबित क़दमी और डट जाना ही हर सफल होने वाले की निजात का माध्यम है। मैं यक़ीनन उम्मीद रखता हूँ कि मैं तुझ पर मय्यतों पर नोहा करने वालियाँ इकट्ठी कर दूँगा। ऐसा बड़ा घाव लगा कर जिसका वर्णन जंगों में बाक़ी रहेगा।

हज़रत अली बिन अबुतालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब कहा कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मैं इस से मुक़ाबले के लिए निकलूँगा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें अपनी तलवार दी और इमामा बाँधा और दुआ की कि हे अल्लाह इस अर्थात अम्र बिन अब्दे वुद्दु के मुकाबले पर इस की मदद कर। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु उस के मुक़ाबला के लिए निकले। दोनों एक दूसरे से मुक़ाबला के लिए एक दूसरे के क़रीब हुए और जब मुक़ाबले पर आए तो वहां इन दोनों के मध्य मिट्टी का ग़ुबार उठा। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे मार कर क़तल कर दिया और अल्लाहु-अकबर का नारा बुलंद किया तो हमने जान लिया कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे क़तल कर दिया है। उस के साथी पीठ फेर कर भाग गए और अपने घोड़ों की वजह से जान बचाने में सफल हो गए।

(सीरतख़ातमन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए. 573)(अल् तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साअद, भाग 2 पृष्ठ 283 ग़ज़व रसूलुल्लाह अलख़नदक-व हेया अल् ग़ज्वातुल अल्अहज़ा, दारे अहया अत्तसुरात अल् अरबी बेरूत 1996 ई) (अल्बदायह-वल-नहायह, भाग 2 भाग 4 पृष्ठ 115 जंग अलख़नदक- व-हेया जंग अल् अहज़ा, प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2001ई)

इस का ज़्यादा विस्तार से वर्णन फ़रमाते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब इस प्रकार लिखते हुए फ़रमाया है कि अम्र एक निहायत प्रसिद्ध तलवार चलाने वाला था और अपनी बहादुरी की वजह से अकेला ही एक हज़ार सिपाही के बराबर समझा जाता था और चूँकि वह बदर के अवसर पर नाकाम और नामुराद हो कर वापिस गया था इस लिए उस का सीना मुस्लमानों के ख़िलाफ़ द्वेष और बदले की भावना से भरा हुआ था। उसने मैदान में आते ही निहायत घमण्ड में युद्ध के लिए बुलाया। कहा कोई है जो मेरे मुक़ाबले पर आए। कई सहाबा उस के मुक़ाबला से कतराते थे परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आज्ञा से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु उस के मुक़ाबला के लिए आगे निकले और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी तलवार उनको इनायत फ़रमाई और उनके वास्ते दुआ की। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने आगे बढ़कर अम्र से कहा। मैंने सुना है कि तुमने यह अह्द किया हुआ है कि यदि क़ुरैश में से कोई व्यक्ति तुमसे दो बातों का निवेदन करेगा तो तुम उनमें से एक बात ज़रूर मान लोगे। अम्र ने कहा हाँ। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा तो फिर में प्रथम बात तुम से यह कहता हूँ कि मुस्लमान हो जाओ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मान कर ख़ुदाई इनामात के वारिस बनो। अम्र ने कहा यह नहीं हो सकता। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि यदि यह बात स्वीकार नहीं है तो फिर आओ मेरे साथ लड़ने को तैयार हो जाओ। इस पर अम्र हँसने लगा और कहने लगा में नहीं समझता था कि कोई व्यक्ति मुझसे यह शब्द कह सकता है। फिर उसने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम और वंश पूछा और उन के बताने पर कहने लगा कि भतीजे तुम अभी बच्चे हो। मैं तुम्हारा ख़ून नहीं गिराना चाहता। अपने बड़ों में से किसी को भेजो। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर में कहा कि तुम मेरा ख़ून तो नहीं गिराना चाहते परन्तु मुझे तुम्हारा ख़ून गिराने में संकोच नहीं है। इस पर अम्र जोश में अंधा हो कर अपने घोड़े से कूद पड़ा और उस की कौंचें काट कर उसे नीचे गिरा दियाता कि घोड़े से वापसी का भी कोई रस्ता न रहे और फिर एक आग के शोला की भांति दीवाना-वार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर बढ़ा और इस ज़ोर से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु पर तलवार चलाई कि वह उनकी ढाल को काटती हुई उनकी माथे पर लगी और उनकी माथे को किसी क़दर ज़ख़मी भी किया परन्तु साथ ही हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाहु अकबर का नारा लगाते हुए ऐसा वार किया कि वो अपने आपको बचाता रह गया और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की तलवार उसे कंधे पुर से काटती हुई नीचे उतर गई और अम्र तड़पता हुआ गिरा और जान दे दी।

(उद्धरित अज़ सीरत खातामन नाबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ऐम.ए., पृष्ठ 588-589)

अम्र बिन अब्दे वुद्द के क़तल होने के बाद कुफ़्फ़ार ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में पैग़ाम भेजा कि वे उसकी लाश दस हज़ार दिरहम के बदले में ख़रीद लेंगे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उसे ले जाओ। हम मुर्दों की क़ीमत नहीं खाते।(अल्बदायाह वन् निहाया,भाग 2 भाग 4 पृष्ठ 116 प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत2001ई)

हज़रत बराअ बिन आज़िब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वर्णन करते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुदैबिया वालों से सुलह की तो हज़रत अली बिन अबुतालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके मध्य एक समझोता लिखा और इस में आप का नाम मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लिखा। मुशरिकों ने कहा कि मुहम्मद रसूलुल्लाह ना लिखो। यदि आप रसूल होते तो हम आप से नहीं लड़ते। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि उसे मिटा दो। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मैं वह व्यक्ति नहीं जो इसे मिटाएगा। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे अपने हाथ से मिटा दिया और उनसे इस शर्त पर सुलह कर ली कि आप और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा तीन दिन मक्का में रहेंगे और वह इस में हथियार जुलुब्बान में रखकर दाख़िल होंगे। लोगों ने पूछा कि यह जुलुब्बान क्या होता है? उन्होंने कहा कि वह ग़लाफ़ जिसमें तलवार मियान के रखी जाती है।

(सही अल् बुख़ारी, किताब सुलह : كَيْفَ يُكْتَبُ هَذَا: مَا صَالَحَ فُلاَنُ بْنُ فُلاَنٍ، وَفُلاَنُ بْنُ فُلاَنٍ، وَإِنْ لَمْ يَنْسُبْهُ إِلَى قَبِيلَتِهِ أَوْ نَسَبِهِ हदीस 2698 उर्दू तर्जुमआ,सही अल् बुख़ारी, भाग 5 पृष्ठ 12-13 प्रकाशित नज़ारत इशाअत रब्वाह)

इस घटना को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तआला अन्हु ने ज़रा विस्तार से वर्णन फ़रमाया है। आप फ़रमाते हैं कि "जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम सुलह हुदैबिया की मज्लिस में तशरीफ़ रखते थे और कुफ़्फ़ार सुलह के लिए शर्तें पेश कर रहे थे। सहाबा अपने दिलों में एक आग लिए बैठे थे और उनके सीने इन ज़ुल्मो की तपिश से जल रहे थे जो कुफ़्फ़ार की ओर से बीस वर्ष से उन पर किए जा रहे थे। उनकी तलवारें मियानों से बाहर निकली पड़ी थीं और वे चाहते थे कि किसी प्रकार अवसर आए तो उन ज़ुल्मों का जो उन्होंने इस्लाम पर किए हैं बदला लिया जाए परन्तु रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ने कुफ़्फ़ार की बातें सुनी और जब यह तजवीज़ उनकी ओर से पेश हुई कि आओ हम आपस में सुलह कर लें तो आपने फ़रमाया बहुत अच्छा हम सुलह कर लेते हैं। उन्होंने कहा कि शर्त यह है कि इस वर्ष तुम उमरा नहीं कर सकते और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बहुत अच्छा इस वर्ष हम उमरा नहीं करेंगे। फिर उन्होंने कहा कि दूसरे वर्ष जब आप उमरा के लिए आएं तो यह शर्त होगी कि आप मक्का में तीन दिन से ज़्यादा न ठहरें। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बहुत अच्छा। मुझे यह शर्त भी स्वीकार है। फिर उन्होंने कहा कि आपको हथयारों के साथ मक्का में दाख़िल होने की आज्ञा न होगी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बहुत अच्छा हम हथयारों के साथ मक्का में दाख़िल नहीं होंगे। सुलह का मुआहिदा तै हो रहा था और सहाबा के दिल अंदर ही अंदर जोश से उबल रहे थे। वे ग़ुस्सा से तिलमिला रहे थे परन्तु कुछ कर नहीं सकते थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सुलह नामा लिखने के लिए निर्धारित किया गया। उन्होंने जब यह मुआहिदा लिखना शुरू किया तो उन्होंने लिखा कि यह मुआहिदा एक ओर तो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके साथीयों की ओर से है और दूसरी ओर मक्का के अमुक अमुक रईस और मक्का वालों की ओर से है। इस पर कुफ़्फ़ार भड़क उठे और उन्होंने कहा हम इन शब्द को बर्दाश्त नहीं कर सकते क्योंकि हम मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को रसूलुल्लाह नहीं मानते। यदि मानते तो उनसे लड़ाई किस बात पर होती। हम तो उनसे मुहम्मद बिन अबदुल्लाह की हैसियत से मुआहिदा कर रहे हैं, मुहम्मद रसूलुल्लाह की हैसियत से मुआहिदा नहीं कर रहे। अत: ये शब्द इस मुआहिदा में नहीं लिखे जाऐंगे। उस समय सहाबा के जोश की कोई इंतिहा न रही और वे ग़ुस्सा से काँपने लग गए। उन्होंने समझा अब ख़ुदा ने एक अवसर पैदा कर दिया है। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम उनकी बात नहीं मानेंगे और हमें उनसे लड़ाई कर के अपने दिल की भड़ास निकालने का अवसर मिल जाएगा परन्तु रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ये लोग ठीक कहते हैं। मुआहिदा में से रसूलुल्लाह का लफ़्ज़ काट देना चाहीए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाया कि अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) इस लफ़्ज़ को मिटा दो परन्तु हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ऐसे इन्सान जो फ़रमांबर्दारी और इताअत का निहायत ही आला दर्जा का उदाहरण थे उनका दिल भी काँपने लग गया। उनकी आँखों में आँसू आ गए और उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! ये लफ़्ज़ मुझसे नहींमिटाए जाते। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया लाओ मुझे काग़ज़ दो और काग़ज़ लेकर जहां रसूलुल्लाह का लफ़्ज़ लिखा था उसे अपने हाथ से मिटा दिया।"

(ख़ुत्बात-ए-महमूद, भाग 20 पृष्ठ 379 से 381 ख़ुत्बा फ़र्मूदा 8 सितम्बर 1939 ई)

ख़ैबर का युद्ध जो मुहर्रम और सिफ़र सात हिज्री में हुआ था उस के बारे में सही मुस्लिम की एक लंबी रिवायत है। हज़रत सलमह बिन अक्वा वर्णन करते हैं कि जब हम ख़ैबर पहुंचे तो उनका सरदार मर्हब अपनी तलवार लहराता हुआ निकला और वह कह रहा था कि ख़ैबर जानता है कि मैं मर्हब हथियारबंद बहादुर तजरबाकार हूँ जब कि जंगें शोले भड़काती हुई आएं अर्थात मेरी बहादुरी का पता लगता है। रावी कहते हैं कि उसके मुक़ाबले के लिए मेरे चचा आमिर निकले और उन्होंने कहा ख़ैबर जानता है कि मैं आमिर हथियारबंद बहादुर ख़तरात में अपने आपको डालने वाला हूँ। रावी कहते हैं दोनों ने ज़रबें लगाई। मर्हब की तलवार आमिर की ढाल पर पड़ी और आमिर उस पर नीचे से वार करने लगे कि उनकी अपनी तलवार ही उनको आ लगी और उसने उनकी रग काट दी और वह इसी से शहीद हो गए। सलमह कहते हैं। मैं निकला तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कई सहाबा कह रहे थे कि आमिर के अमल बातिल हो गए उसने अपने आपको क़तल किया। वह कहते हैं। मैं रोते हुए नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट आया। मैंने कहा हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आमिर के अमल नष्ट हो गए? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह किस ने कहा? वह कहते हैं कि मैंने कहा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कई सहाबा ने। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने यह कहा ग़लत कहा। इस के लिए तो दोहरा अज्र है। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर भेजा। उनकी आँखें आई हुई थीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं उस व्यक्ति को झंडा दूँगा जो अल्लाह और उस के रसूल से मुहब्बत करता है या अल्लाह और उस का रसूल उस से मुहब्बत करते हैं। वह कहते हैं मैं हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट गया और उन्हें साथ लेकर चल पड़ा। उनकी आँखें आई हुई थीं। अर्थात बीमारी से आँखें उबली हुई थीं, सूजी हुई थीं। यहां तक कि मैं उन्हें लेकर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट पहुंचा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी आँखों में अपने मुख का पानी लगाया। वे ठीक हो गईं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें झंडा दिया और मर्हब निकला और उसने कहा कि ख़ैबर जानता है कि मैं मर्हब हूँ। हथियारबंद बहादुर तजरबाकार जबकि जंगें शोले भड़का रही होती हैं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा।

أَنَا الَّذِي سَمَّتْنِي أُمِّي حَيْدَرَهْ
كَلَيْثِ غَابَاتٍ كَرِيهِ الْمَنْظَرَهْ
أُوفِيهِمْ بِالصَّاعِ كَيْلَ السَّنْدَرَه

कि मेरा नाम मेरी माँ ने हैदर रखा है। हैबतनाक शक्ल वाले शेर की मानिंद जो जंगलों में होता है। में एक साअ के बदले सन्दराह देता हूँ। यह अरबी का एक मुहावरा है जिसका अर्थ यह है। इस प्रकार भी हो सकता है कि शेर के मुक़ाबले में सवाशेर जो उर्दू मुहावरा इस्तिमाल होता है कि ऐसे को तैसा। ईंट का जवाब पत्थर से देने वाला। सुंदरा के शाब्दिक अर्थ "मिकयाल वसेअ" अर्थात बहुत बड़ा पैमाना है। साअ केवल तीन सैर का होता है सन्दराह बड़ा होता है। फिर रावी कहते हैं कि यह कहने के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने मर्हब के सिर पर चोट लगाई और क़तल कर दिया और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथों फ़तह हुई। यह भी मुस्लिम की रिवायत है। (सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर साहब एम.ए., पृष्ठ 837)(सही मुस्लिम, किताबुल जिहाद-वस्सेर, बाब ग़ज़वा ज़ी क़िरद-ओ-ग़ैरहा, हदीस नंबर 4678 उर्दू अनुवाद, सही मुस्लिम, भाग 9 पृष्ठ 240 हाशिया के साथ, प्रकाशित नूर फ़ाउंडेशन रब्वाह)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "ख़ैबर के दिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को अवसर मिला। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आज में उसे अवसर दूँगा जो ख़ुदा से मुहब्बत करता है और जिस से ख़ुदा तआला मुहब्बत करता है और तलवार उसके सपुर्द करूँगा जिसे ख़ुदा तआला ने फ़ज़ीलत दी है। हज़रत उमर कहते हैं कि मैं इस मज्लिस में मौजूद था और अपना सिर ऊंचा करता था कि शायद रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे देख लें और मुझे दे दें। परन्तु आप दीखते और चुप रहते। मैं फिर सिर ऊंचा करता और आप फिर देखते और चुप रहते यहाँ तक कि अली रज़ियल्लाहु अन्हु आए, उनकी आँखें सख़्त दुखती थीं। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। अली रज़ियल्लाहु अन्हु आगे आओ। वह आपके निकट पहुंचे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने मुख का पानी उनकी आँखों पर लगाया फ़रमाया : अल्लाह तआला तुम्हारी आँखों को शिफ़ा दे। यह तलवार लो जो अल्लाह तआला ने तुम्हारे सपुर्द की है।'

(ख़ुत्बात-ए-महमूद , भाग 19 पृष्ठ 614 ख़ुत्बा फ़र्मूदा 2 सितंबर1938ई)

एक और स्थान पर भी हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस का इस प्रकार वर्णन फ़रमाते हैं कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुदैबिया से वापस आने के क़रीबन पाँच माह बाद यह फ़ैसला किया कि यहूदी ख़ैबर से जो मदीना से केवल कुछ मंज़िल की दूरी पर था और जहां से मदीना के ख़िलाफ़ आसानी से साज़िश की जा सकती थी निकाल दिए जाएं। इसलिए आप

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सोला सौ सहाबा के साथ अगस्त 628 ई में ख़ैबर की ओर कूच फ़रमाया। ख़ैबर एक क़िला बंद शहर था और इस के चारों ओर चटानों के ऊपर क़िले बने हुए थे। ऐसे मज़बूत शहर को इतने थोड़े से सिपाहियों के साथ फ़तह कर लेना कोई आसान बात न थी। इर्द-गिर्द की छोटी छोटी चौकियां तो छोटी छोटी लड़ाईयों के बाद फ़तह हो गईं। लेकिन जब यहूदी सिमट सिमटा कर शहर के मर्कज़ी क़िला में आगए तो उस के फ़तह करने की समस्त चेष्टाएं बेकार जाने लगीं। एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुदा तआला ने बताया कि इस शहर की फ़तह हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तआला अन्हु के हाथ पर मुक़द्दर है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुबह के समय यह ऐलान किया कि मैं इस्लाम का काला झंडा आज उस के हाथ में दूँगा जिसको ख़ुदा और उस का रसूल और मुस्लमान प्यार करते हैं। ख़ुदा तआला ने इस क़िला की फ़तह उस के हाथ पर मुक़द्दर की है। इस के बाद दूसरी सुबह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुलाया और झंडा उनके सपुर्द किया। जिन्हों ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ौज को साथ लेकर क़िला पर आक्रमण किया। इस के अतिरिक्त यहूदी क़िला बंद थे अल्लाह तआला ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को इस दिन ऐसी क़ुव्वत बख़शी कि शाम से पहले पहले क़िला फ़तह गया।'' (दीबाचा तफ्सीरुल कुरआन, अनवारुल ऊलूम, भाग 20 पृष्ठ 325-326)

फिर एक और स्थान हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन करते हुए इसी घटना के सम्बन्ध में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस प्रकार फ़रमाया है कि "ख़ैबर की फ़तह का सवाल पैदा हुआ तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और लश्कर इस्लामी का इलम आप के सपुर्द करना चाहा परन्तु हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की आँखें दुख रही थीं" यहां आँखों के दुखने का भी वर्णन आ गया "और शिद्दत-ए-तकलीफ़ की वजह से वे सूजी हुई थीं। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को इस हालत में देखा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया इधर आओ। वह सामने आए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना मुख का पानी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की आँखों पर लगाया और उनकी आँखें उसी समय अच्छी हो गईं।"

(तफ़सीर कबीर,भाग 8 पृष्ठ 398-399)

फिर एक और स्थान पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथों ठीक होने का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "हम देखते हैं कि दुनिया में ऐसे नज़्ज़ारे नज़र आते हैं कि ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से ग़ैरमामूली तौर पर शिफ़ा कई मरीज़ों को मिलती है बग़ैर इसके कि तिब्बी ज़राए इस्तिमाल हों या उन मौक़ों पर शिफ़ा मिलती है कि जब तिब्बी ज़राए मुफ़ीद नहीं हुआ करते। इसलिए रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी के वाक़ियात में से इस किस्म की शिफ़ा की एक मिसाल ख़ैबर के युद्ध के समय मिलती है। ख़ैबर की जंग के दौरान में एक दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से फ़रमाया कि ख़ैबर की फ़तह उस व्यक्ति के लिए मुक़द्दर है जिसके हाथ में मैं झंडा दूँगा। हज़रत उमर रज़ी फ़रमाते हैं जब वह समय आया तो मैंने गर्दन ऊंची कर-कर के देखना शुरू किया कि शायद मुझे ही रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम झंडा दें। परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें इस काम के लिए निर्धारित न फ़रमाया। इतने में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आए और उनकी आँखें सख़्त दुख रही थीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी आँखों पर अपना मुख का पानी लगा दिया और आँखें तुरंत अच्छी हो गईं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके हाथ में झंडा देकर ख़ैबर की फ़तह का काम उनके किया।''

(हस्ती बारी तआला, अनवारुल ऊलूम, भाग 6 पृष्ठ 327)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की एक मिसाल बड़ी ईमान को बढ़ाने वाली है। ख़ैबर के युद्ध में एक बहुत बड़े यहूदी जरनैल के मुक़ाबला के लिए निकले और बड़ी देर तक उस से लड़ते रहे क्योंकि वह भी लड़ाई के फ़न का माहिर था इस लिए काफ़ी देर तक मुक़ाबला करता रहा, आख़िर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे गिरा लिया और आप उसकी छाती पर चढ़ कर बैठ गए और इरादा किया कि तलवार से इस की गर्दन काट दें। इतने में इस यहूदी ने आप के मुँह पर थूक दिया। उस पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु उसे छोड़कर अलग खड़े हो गए। वो यहूदी सख़्त हैरान हुआ कि उन्होंने यह क्या किया?" कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझ पर क़ाबू पा लिया था फिर मुझे छोड़ दिया। "जब यह मेरे क़तल पर क़ादिर हो चुके थे तो उन्होंने मुझे छोड़ क्यों दिया? इसलिए उसने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से दरयाफ़त किया कि आप मुझे छोड़ कर अलग क्यों हो गए? आप ने फ़रमाया कि मैं तुम से ख़ुदा की रज़ा के लिए लड़ रहा था परन्तु जब तुमने मेरे मुँह पर थूक दिया तो मुझे ग़ुस्सा आ गया और मैंने समझा कि अब यदि मैं तुम को क़तल करूँगा तो मेरा क़तल करना अपने नफ़स के लिए होगा, ख़ुदा के लिए नहीं होगा। अत: मैंने तुम्हें छोड़ दियाता कि मेरा ग़ुस्सा दूर हो जाए और मेरा तुम्हें क़तल करना अपने नफ़स के लिए न रहे। यह कितना अज़ीमुश्शान कमाल है कि ऐन जंग के मैदान में उन्होंने एक शदीद दुश्मन को केवल इस लिए छोड़ दिया ताकि उनका क़तल करना अपने नफ़स के ग़ुस्सा की वजह से न हो बल्कि अल्लाह तआला की रज़ा के लिए हो।"

(सैर-ए-रुहानी नंबर 2 अनवारुल ऊलूम, भाग 16 पृष्ठ 74)

रिवायत में आता है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने सूरत तौबा की आरंभिक आयात का हज के अवसर पर ऐलान किया। यह रिवायत इस प्रकार है। अब्बू जाफ़र मुहम्मद बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब सूरह बराअत (सूरह तौबा) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु को बतौर अमीर हज भिजवा चुके थे। आप अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़ किया गया कि या सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! यदि आप यह सूरत हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर भेज दें ताकि वह वहां पढ़ें तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे अहले बैअत में से किसी व्यक्ति के सिवा कोई यह फ़रीज़ा मेरी ओर से अदा नहीं कर सकता। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलवाया और फ़रमाया: सूरत तौबा के शुरू में जो वर्णन हुआ है इस को ले जाओ और क़ुर्बानी के दिन जब लोग मिनाअ में इकट्ठे हों तो उनमें ऐलान कर दो कि जन्नत में कोई काफ़िर दाख़िल नहीं होगा और इस वर्ष के बाद किसी मुशरिक को हज करने की आज्ञा न होगी। न ही किसी को नंगे बदन बैतुल्लाह के तवाफ़ की आज्ञा होगी और जिस किसी के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कोई मुआहिदा किया है उस की मुद्दत पूरी की जाएगी। हज़रत अली बिन अबुतालिब ओर रसूलुल्लाह अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ऊंटनी अज़बा पर सवार हो कर रवाना हुए। रास्ता में ही हज़रत अबुबकर रज़ियल्लाहु अन्हु से जा मिले। जब हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को रास्ते में देखा तो कहा कि आप को अमीर निर्धारित किया गया है या आप मेरे अधीन होंगे? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि आप के अधीन। फिर दोनों रवाना हुए। हज़रत अबुबकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों की हज के उमूर पर निगरानी की और इस वर्ष अरब वालो ने अपनी उन्हीं जगहों पर पड़ाव किया हुआ था जहां वह ज़माना जाहिलीयत में पड़ाव किया करते थे। जब क़ुर्बानी का दिन आया तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और लोगों में इस बात का ऐलान किया जिस का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ईरशाद फ़रमाया था और कहा हे लोगो जन्नत में कोई काफ़िर दाख़िल नहीं होगा और इस वर्ष के बाद कोई मुशरिक हज नहीं करेगा। न ही किसी को नंगे बदन बैतुल्लाह के तवाफ़ की आज्ञा होगी और जिस किसी के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कोई मुआहिदा किया है उसकी मुद्दत पूरी की जाएगी और लोगों को इस ऐलान के दिन से चार माह तक की मोहलत दी ताकि हर क़ौम अपने अमन की जगहों

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

या अपने इलाक़ों की ओर लौट जाए। फिर न किसी मुशरिक के लिए कोई अह्द या मुआहिदा होगा और न ज़िम्मेदारी इस अह्द या मुआहिदा के अतिरिक्त जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट किसी मुद्दत तक हो। अर्थात जिस सन्धि की सीमा अभी बाक़ी है इन मुआहिदों के अतिरिक्त कोई नई सन्धि नहीं होगी। तो इस का निर्धारित सीमा तक निकट किया जाएगा। फिर इस वर्ष के बाद न किसी मुशरिक ने हज किया और न किसी ने नंगे बदन हज किया। फिर वे दोनों (हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबुबकर रज़ियल्लाहु अन्हु) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो गए।

(अल् सीरतुल नब्विया ले इब्ने लेइब्ने हिशाम, हज अबी बक्र ब्निन्नास सन्नता तिसआ व इख्तेसास अन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अली बिन अबी तालिब, पृष्ठ 832 दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2001 ई)

यह रिवायत जो अब मैं पढ़ने लगा हूँ पहले भी एक सहाबी के वर्णन में वर्णन हो चुकी है लेकिन यहां हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से भी वर्णन करता हूँ। फ़तह मक्का के समय की है जो रमज़ान 8 हिज्री में जनवरी 630 ई की घटना है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है। उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे, जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु और मिक़दाद बिन असवद को भेजा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम चले जाओ तुम रौज़ा ख़ाख़, यह फ़तह मक्का से पहले की घटना है जो औरत की घटना वर्णन की जाती है। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम चले जाओ। जब तुम रौज़ा ख़ाख़ एक स्थान है वहां पहुँचो तो वहां एक शुत्र सवार औरत होगी और उसके पास एक पत्र है तुम वह पत्र उस से ले लो। हम चल पड़े। हमारे घोड़े सरपट दौड़ते हुए हमें ले गए। जब हम रौज़ा ख़ाख़ में पहुंचे तो हम क्या देखते हैं कि वहां एक शुत्र सवार औरत मौजूद है। हम ने उसे कहा कि पत्र निकालो। वह कहने लगी कि मेरे पास कोई पत्र नहीं है। हम ने कहा तुम्हें पत्र निकालना होगा अन्यथा हम तुम्हारे कपड़े उतार देंगे और तलाशी लेंगे। इस पर उसने वह पत्र अपने जूड़े से निकाला और हम वह पत्र रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट ले आए। देखा तो उस में लिखा था कि हातिब बिन अबी बलता की ओर से अहले मक्का के मुशरिकों के नाम। वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के किसी इरादा की उनको सूचना दे रहा था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हातिब बिन अबी बलता को बुलाया और पूछा हातिब यह क्या है? उसने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मेरे सम्बन्ध में जल्दी न फ़रमाएं। मैं एक ऐसा आदमी था जो क़ुरैश में आकर मिल गया था। उनमें से न था और दूसरे मुहाजिरीन जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे उनकी मक्का में रिश्तेदारियां थीं जिनके माध्यम से वे अपने घर-बार और माल तथा अस्बाब को बचाते रहे हैं। मैंने चाहा कि इन मक्का वालों पर कोई एहसान कर दूं क्योंकि उनमें कोई रिश्तेदारी तो मेरी नहीं थी शायद वे इस एहसान ही की वजह से मेरा ख्याल करें और मैंने किसी कुफ्र या इर्तिदाद की वजह से यह नहीं किया, (न मैंने इन्कार किया है, न मुर्तद हुआ हूँ, न मैंने इस्लाम को छोड़ा है, न मैं मुनाफ़िक़ हूँ। मैंने यह काम इसलिए किया) इस्लाम स्वीकार करने के बाद कुफ्र कभी पसंद नहीं किया जा सकता। (मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ) यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उसने तुम से सच वर्णन किया है। अर्थात उनकी बात मान ली।

(सीरतख़ातमन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ऐम.ए., पृष्ठ 840)

(उद्धरित अज़ सही अल् बुख़ारी, किताब उल-जिहाद, बाब अल्जासूस, हदीस 3007 उर्दू तर्जुमआ सही अल् बुख़ारी अज़ हज़रत सय्यद ज़ैनुलआबेदीन वली अल्लाह शाह साहिब,भाग 5 पृष्ठ 350 ता352 प्रकाशित नज़ारत इशाअत रब्वाह)

इस घटना का वर्णन फ़रमाते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं "केवल एक कमज़ोर सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने मक्का वालों को पत्र लिख दिया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दस हज़ार का लश्कर लेकर निकले हैं। मुझे मालूम नहीं आप कहां जा रहे हैं लेकिन मैं क़ियास करता हूँ कि शायद वह मक्का की ओर आ रहे हैं। मेरे मक्का में कई अज़ीज़ और रिश्तेदार हैं मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम इस मुश्किल घड़ी में उनकी मदद करोगे और उन्हें किसी किस्म की तकलीफ़ नहीं पहुंचने दोगे। यह पत्र अभी मक्का नहीं पहुंचा था कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुबह के समय हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और फ़रमाया तुम अमुक स्थान जाओ। अल्लाह तआला ने मुझे बताया है कि वहां एक औरत ऊंटनी पर सवार तुम को मिलेगी उस के निकट एक पत्र होगा जो वह मक्का वालों की ओर ले जा रही है। तुम वह पत्र उस औरत से ले लेना और तुरंत मेरे निकट आ जाना। जब वे जाने लगे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। देखना वह औरत है उस पर सख़्ती न करना। इसरार करना और ज़ोर देना कि तुम्हारे निकट पत्र है लेकिन यदि फिर भी वह न माने और मिन्नतें समाजतें भी काम न आएं तो फिर तुम सख़्ती भी कर सकते हो और यदि उसे क़तल करना पड़े तो क़तल भी कर सकते हो लेकिन पत्र नहीं जाने देना। इसलिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु वहां पहुंच गए। औरत मौजूद थी। वह रोने लग गई और कस्में खाने लग गई कि क्या मैं ग़द्दार हूँ? धोखे बाज़ हूँ? आख़िर क्या है? तुम तलाशी ले लो। इसलिए उन्होंने इधर उधर देखा, उसकी जेबें टटोलीं, सामान देखा परन्तु पत्र न मिला। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे मालूम होता है पत्र उस के निकट नहीं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को जोश आ गया। आप ने कहा तुम चुप रहो और बड़े जोश से कहा कि ख़ुदा की क़सम! रसूल कभी झूठ नहीं बोल सकता। इसलिए उन्होंने उस औरत से कहा कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा है कि तेरे निकट पत्र है और ख़ुदा की क़सम मैं झूट नहीं बोल रहा। फिर आप ने तलवार निकाली और कहा या तो सीधी तरह पत्र निकाल कर दे दे अन्यथा याद रख यदि तुझे नंगा कर के भी तलाशी लेनी पड़ी तो मैं तुझे नंगा करूँगा क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सच्च बोला है और तो झूठ बोल रही है। इसलिए वह डर गई और जब उसे नंगा करने की धमकी दी गई तो उसने झट अपनी मेंढीयां खोली। इन मेंढियों में उसने पत्र रखा हुआ था जो उसने निकाल कर दे दिया।'

(सैरे रुहानी 7) अनवारुल ऊलूम, भाग 24 पृष्ठ 262-263)

फिर एक स्थान पर इस घटना का विस्तार से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस प्रकार वर्णन फ़रमाते कि "आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में एक सहाबी ने अपने रिश्तेदारों को मक्का पर मुसलमानों के आक्रमण की ख़बर पोशीदा तौर पर पहुंचानी चाही ताकि इस हमदर्दी के इज़हार की वजह से वे इसके रिश्तेदारों से नेक व्यवहार करें। लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इलहाम के माध्यम से यह बात बता दी गई। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और कुछ एक और सहाबा को भेजा कि अमुक स्थान पर एक औरत है इस से जा कर काग़ज़ ले आओ। उन्होंने वहां पहुंच कर उस औरत से काग़ज़ मांगा तो उसने इन्कार कर दिया। कई सहाबा ने कहा कि शायद रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ग़लती लगी है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा नहीं। आप अलैहिस्सलाम की बात कभी ग़लत नहीं हो सकती। जब तक उस से काग़ज़ न मिले मैं यहां से नहीं हटूंगा। उन्होंने उस औरत को डाँटा तो उसने वह काग़ज़ निकाल कर दिया।''

(ख़ुत्बाते महमूद, भाग 4 पृष्ठ 182-183-ख़ुत्बा फ़र्मूदा 25 सितम्बर 1914 ई)

फ़तह मक्का के अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब मस्जिदे हराम में तशरीफ़ फ़र्मा थे तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आप की सेवा में हाज़िर हुए और उनके हाथ में कअबा की चाबी थी। उन्होंने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे लिए सिकाया अर्थात हज के अवसर पर पानी पिलाने की डयूटी के साथ हिजाबा, ख़ाना काअबा को खोलने और बंद करने की डयूटी की ज़िम्मेदारियाँ सौंप दें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उसमान बिन तलहा किधर है? उसे बुलाया गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे उसमान यह तेरी चाबी है। आज का दिन नेकी और वफ़ा का दिन है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि मैं तुम लोगों को ऐसी चीज़ नहीं दूँगा जिससे तुम लोग कठिनता और तकलीफ़ में पड़ो बल्कि वह दूँगा जिसमें तुम लोगों के लिए ख़ैर और बरकत होगी और मैं तुमको वह चीज़ नहीं दूँगा जिसकी तुम ख़ुद ज़िम्मेदारी लेना चाहो। ख़ुद मांग के ले रहे हो तो नहीं (दूँगा)।

(अस्सीरतुल नब्विया ले इब्ने हिशाम, पृष्ठ 744 दख़ूल रसूलुल हरम, प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2001ई)

हज़रत उम्मे हानी बिन्त अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का के ऊपर के हिस्सा में पड़ाव

फ़रमाया तो बनी मख़ज़ूम में से मेरे दो सुसुराली रिश्तेदार भाग कर मेरे निकट आ गए। हज़रत उम्मे हानी कहती हैं कि मेरा भाई अली रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे निकट आया और कहा ख़ुदा क़सम ! मैं उन दोनों को क़तल कर दूँगा। हज़रत उम्मे हानी कहती हैं कि मैंने इन दोनों के लिए अपने घर का दरवाज़ा बंद कर दिया। फिर मैं ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट मक्का के ऊपर के हिस्सा में आई। मैंने आप अलैहिस्सलाम को पानी के एक बर्तन में से ग़ुसल करते पाया जिसमें गूँधे हुए आटे के चिन्ह मौजूद थे और आप अलैहिस्सलाम की बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हु एक कपड़े के साथ आप के लिए पर्दा किए हुए थीं। नहाने के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने कपड़े तबदील किए। फिर चाशत के समय आठ रकअत नमाज़ अदा की। फिर आप मेरी ओर मुतवज्जा हुए और फ़रमाया हे उम्मे हानी। ख़ुश-आमदीद। तुम्हारा कैसे आना हुआ? उन्होंने उन दोनों आदमियों और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के सम्बन्ध में सारा मामला बताया कि इस प्रकार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु उनको क़तल करना चाहते थे और मैं उनको अपने घर में छिपा के आई हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिन को तुमने पनाह दी उन्हें हमने पनाह दी और जिन को तुमने अमन दिया उनको हमने भी अमन दिया। अत: वे इन दोनों को क़तल न करे अर्थात रसूल पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु उनको क़तल नहीं करेंगे।

(अल् सीरतुल नब्विया ले इब्ने हिशाम पृष्ठ 743-744 मिन अमरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बे-तुफ़तलेहिम्, प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2001ई)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुवेरस बिन नुकीद के क़तल का हुक्म नामा जारी फ़रमाया हुआ था क्योंकि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मक्का में कष्ट पहुँचाता था और आप अलैहिस्सलाम को कष्ट पहुंचाने के लिए बड़ी बड़ी बातें करता था और षड्यंत्र किया करता था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत अबास रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत उम्म कुलसूम को मक्का से मदीना भिजवाने के लिए ऊंट पर बिठाया तो हुवेरिस ने उस ऊंट को गिरा दिया था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़तह मक्का के अवसर पर हुवेरिस बिन नुकीद को क़तल किया था जबकि वह भागने के लिए निकल चुका था।

(अस्सीरतुल हल्बिया भाग 3 पृष्ठ 131 बाब वर्णन मग़ाज़ीया, प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2002ई)

हुनैन की जंग जो शवाल आठ हिज्री में हुई। रिवायत में आता है कि हुनैन की जंग के समय पर मुहाजिरीन का झंडा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट था। हुनैन की जंग के दौरान जब घमसान की जंग हुई और कुफ़्फ़ार के सख़्त हमले की वजह से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आसपास केवल कुछ सहाबा ही रह गए तो उन कुछ सहाबा में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी शामिल थे।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर साहब एम.ए., पृष्ठ 840) (अल् तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साअद, भाग 2 पृष्ठ 325) वर्णन अदि मुग़ाजी रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम-सिरायाह-व-इसमाऔहा-व-तवारीख़-व-जमल मा कांफी कुल ग़ज़ा-व-सरीया मिनहा ग़ज़व रसूलुल्लाह इला हुनैन, प्रकाशित दारे अहया अलतूरास् बेरूत लबनान 1996ई)

हुनैन की जंग में मुशरिकों की सफ़ों के आगे लाल ऊंट पर सवार एक व्यक्ति था जिसके हाथ में एक काला झंडा था। यह झंडा एक बहुत लंबे नेज़े से बाँधा गया था। बनू हवाज़िन के लोग उस व्यक्ति के पीछे थे। यदि कोई व्यक्ति उस की ज़द में आ जाता तो वह तुरंत उस को नेज़ा मार देता और यदि वो उस के नेज़े की ज़द से बच जाता तो वह अपने पीछे वालों के लिए नेज़ा उठा कर इशारा करता और वे लोग उस पर टूट पड़ते और वे लाल ऊंट वाले के पीछे रहते। यह व्यक्ति इसी प्रकार हमले करता फिर रहा था कि अचानक हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और एक अंसारी व्यक्ति उस की ओर मुतवज्जा हुए और उसे क़तल करने के लिए बढ़े। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस की पीठ की ओर से आकर उस के ऊंट के कूल्हों पर वार किया जिसके नतीजा में ऊंट उल्टे मुँह गिरा। उसी समय उस अंसारी व्यक्ति ने उस पर छलांग लगाई और ऐसा सख़्त वार किया कि उस की टांग आधी पिंडली से कट गई। उसी समय मुसलमानों ने मुशरिकों पर एक सख़्त आक्रमण कर दिया।

(अस्सीरतुल हल्बिया भाग 3 पृष्ठ 158 बाब वर्णन मग़ाज़ी, प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2002ई)

सरिया हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बनू तैई के बारे में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को डेढ़ सौ अफ़राद के साथ बनू तैई के बुत फ़ुलस को गिराने के लिए रवाना फ़रमाया। बनू तैई का इलाक़ा मदीना के उत्तर पूर्व में स्थित था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस सरिया के लिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को एक काले रंग का बड़ा झंडा और सफ़ैद रंग का छोटा झण्डा अता फ़रमाया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु सुबह के समय हातिम पर हमला किया और उनके बुत फ़ुलस को नष्ट कर दिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बनू तैई से बहुत सारा माल ग़नीमत और क़ैदी लेकर मदीना वापस आए।

(अल् तब्कातुल कुबरा ले इब्ने साअद, ई 2 पृष्ठ 331 सिरया अली बिन अबी तालिब अली रज़ियल्लाहु अन्हु अलफ़लस् ...., दारे अहया अल्तुर्रास अल् अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)

तबूक का युद्ध जो रजब 9 हिज्री में हुआ उस के बारे में रिवायत है जो मुसअब बिन साअद अपने पिता से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तबूक के लिए निकले और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना में अपना स्थानापन निर्धारित फ़रमाया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा क्या आप मुझे बच्चों और औरतों में पीछे छोड़कर जाते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : क्या तुम ख़ुश नहीं होते कि तुम्हारा स्थान मुझ से वही है जो हारून का मूसा से था परन्तु यह बात है कि मेरे बाद कोई नबी नहीं।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद एम.ए., पृष्ठ 842) (सही अल् बुख़ारी, किताब तबूक का युद्ध, हदीस4416)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस घटना को वर्णन फ़रमाते हुए फ़रमाते हैं कि "रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक बार जंग पर गए और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने पीछे स्थानापन बना गए। पीछे केवल मुनाफ़िक़ ही मुनाफ़िक़ रह गए थे। इस कारण से वह घबरा कर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए कि मुझे भी ले चलें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तसल्ली दी और फ़रमाया।

اَلَا تَرْضٰی اَنْ تَکُوْنَ مِنِّیْ بِمَنْزِلَۃِ هَارُوْنَ مِنْ مُّوْسٰی اِلَّا اَنَّہٗ لَیْسَ نَبِیٌّ بَعْدِیْ

अर्थात हे अली रज़ियल्लाहु अन्हु तुम्हें मुझ से हारून और मूसा का सम्बन्ध प्राप्त है। एक दिन हारून की तरह तुम भी मेरे ख़लीफ़ा होगे लेकिन इस सम्बन्ध के अतिरिक्त तुम नबी नहीं होगे।"

(ख़िलाफ़त राशिदा, अनवारुल ऊलूम,भाग 15 पृष्ठ 579)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को यमन की ओर भेजने के बारे में आता है कि दस हिज्री में रसूलुल्लाह

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमव ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को यमन की ओर भिजवाया। इस से पूर्व रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को उनकी ओर भेजा कि वो उनको इस्लाम की ओर बुलाऐं, अर्थात यमन वालों की तरफ़, लेकिन उन लोगों ने इन्कार कर दिया फिर इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अहले यमन को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पत्र पढ़ कर सुनाया। फिर पूरे हमदान ने एक ही दिन में इस्लाम स्वीकार कर लिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके स्वीकार इस्लाम के सम्बन्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पत्र लिखा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीन बार यह वाक्य दुहराया कि हमदान पर सलामती हो। हमदान यमन में मदीना के दक्षिण पूर्व में मदीना से लगभग साढ़े ग्यारह सौ किलो मीटर दूर स्थित एक शहर है। फिर उस के बाद अहल यमन ने भी इस्लाम स्वीकार कर लिया और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस के सम्बन्ध में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को लिखा। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शुक्र सिज्दा अदा किया।

(अल्कामिल फित्तारीख़, भाग 2 पृष्ठ 168 ज़िक्र अर्रसूल आला अली अल्यमन व इस्लाम हमदान, प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2006ई) (ग़ज़वात-व-सिराया अज़ अल्लामा मुहम्मद अज़हर फ़रीद शाह, पृष्ठ 550 प्रकाशित फ़रीद पब्लिशरज़ साहीवाल 2018 ई)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे यमन की ओर क़ाज़ी बना कर भेजा तो मैंने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप मुझे भेज रहे हैं और मैं नौजवान हूँ और मुझे क़ज़ा का कोई इल्म भी नहीं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अवश्य अल्लाह तेरे दिल को ज़रूर हिदायत देगा और तेरी ज़बान को मज़बूती बख़्शेगा। अत: जब तेरे सामने दो झगड़ा करने वाले बैठें तो उस समय तक फ़ैसला न करना यहां तक कि तू दूसरे से भी सुन ले जैसा कि तू ने पहले से सुना। ऐसा करना इस बात के ज़्यादा क़रीब है कि तेरे लिए फ़ैसला वाज़िह हो जाए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि इसके बाद मुझे फ़ैसला करने में कभी कोई संदेह पैदा नहीं हुआ।

(सुंन अब्बू दाऊद, किताबुल कज़ी, बाब कैफ़ल क़ज़ा, हदीस नंबर3582)

हज़रत अम्र बिन शास इस सुलह हुदैबिया में शामिल होने वालो में से थे। वह वर्णन करते हैं कि मैं हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ यमन की ओर रवाना हुआ। यात्रा के दौरान उन्होंने मेरे साथ सख़्ती की यहां तक कि मैं अपने दिल में उनके बारे में कुछ महसूस करने लगा। अत: जब मैं यमन से वापस आया तो मैंने उनके ख़िलाफ़ मस्जिद में शिकायत की यहां तक कि यह बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक पहुंच गई। एक दिन में मस्जिद में दाख़िल हुआ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने कुछ सहाबा के साथ तशरीफ़ फ़र्मा थे। जब आप अलैहिस्सलाम की नज़र मुझ पर पड़ी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे ग़ौर से देखा। वह कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे तेज़ नज़र से देखा यहां तक कि जब मैं बैठा तो फ़रमाया : हे अम्र ख़ुदा की क़सम तू ने मुझे दुख दिया है। मैंने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ इस बात से कि आपको कष्ट पहुंचाऊं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : क्यों नहीं जिसने अली रज़ियल्लाहु अन्हु को तकलीफ दी तो उसने मुझे तकलीफ दी। यह मस्नद अहमद बिन हम्बल की रिवायत है।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल, भाग 5 पृष्ठ 478- 479 हदीस अम्र बिन शास्, हदीस 16056 अलेमुल क़ुतुब बेरूत1998ई)

हज़रत अब्बू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं। यह रिवायत जो मैंने पहले पढ़ी है वह मस्नद की है। अगली एक रिवायत यह है कि हज़रत अब्बू सईद ख़ुदरी ने वर्णन किया कि एक अवसर पर लोगों ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की शिकायत की तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम में ख़िताब के लिए खड़े हुए। मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना, हे लोगो! तुम अली रज़ियल्लाहु अन्हु की शिकायत न करो। ख़ुदा की क़सम वह अल्लाह की ज़ात के बारे में बहुत डरने वाला है या फ़रमाया वह अल्लाह के मार्ग में बहुत डरने वाला है इस बात से कि उसकी शिकायत की जाए ।

(अल् सीरतुल नब्विया ले इब्ने हिशाम, पृष्ठ 867-868 मवाफ़ात अला फ़ी कफ़ूला मीनल यमीन, रसूलुल्लाह फ़ील हज्ज, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया 2001 ई)

यह वर्णन अभी चल रहा है। इंशा अल्लाह आगे भी वर्णन होगा। आज भी मैं दुआ की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ। पिछले जुम्आ अल-जज़ाएर के बारे में वर्णन नहीं हुआ था वहां भी अहमदियों पर काफ़ी सख़्त हालात हैं और कई को जेल में भी डाला गया है। उन के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला उनके भी हालात में आसानी पैदा करे और जेल की रिहाई के भी सामान हों और वहां की जो सख़्ती की हालात हैं हुकूमत को भी अक़ल दे कि वह इन्साफ़ से काम लेते हुए अहमदियों के हक़ अदा करने वाली हो। इसी प्रकार पाकिस्तान के हालात भी सख़्ती की ओर हैं। मैंने कहा था व्यक्तिगत तौर पर कई अधिकारियों ऐसे हैं उन के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला यदि इन मौलवियों और अधिकारियों को अक़ल नहीं देना चाहता या उनको अक़ल नहीं आएगी या उनका मुक़द्दर ही यही है कि वो इसी प्रकार करते रहें और अल्लाह तआला की पकड़ में आएं तो फिर अल्लाह तआला जल्द उनकी पकड़ के सामान पैदा फ़रमाए और अहमदियों के लिए आसानीयां पैदा फ़रमाए।

नमाज़ के बाद में जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा जो रशीद अहमद साहिब इब्ने मुहम्मद अबदुल्लाह साहिब रब्वाह का है। यह ताहिर नदीम साहिब जो हमारे अरबी डैसक के मुरब्बी हैं उनके पिता थे। 28 अक्तूबर को 76 वर्ष की उम्र में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजेऊन।

उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके दादा हज़रत अब्दुल ग़फ़ूर साहिब के माध्यम से आई थी जिन्हों ने अपने ख़ालाज़ाद हज़रत मौलवी अल्लाह दत्ता साहिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथा 1891-1892 ई में कादियान जा कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम के हाथ पर बैअत की थी। हज़रत मौलवी अल्लाह दत्ता साहिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पढ़े लिखे आलिम थे और आपकी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम के साथ दाअवा से पहले भी मेल-मुलाक़ात थी। आपने ख़ाब में देखा कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम ने हाथ में पकड़ा हुआ है। इसलिए हज़रत मौलवी अल्लाह दत्ता साहिब अपने ख़ाला के बेटे हज़रत मौलवी अब्दुल ग़फ़ूर साहिब जो मरहूम के दादा थे उनको साथ लेकर क़ादियान गए और दोनों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत कर ली। बाद में मौलवी अल्लाह दत्ता साहिब की तब्लीग़ से अली पूर और गांव हसनपुर मुल्तान में बहुत से लोग अहमदियत में शामिल हुए। एक लंबा समय तक मरहूम को अपनी जमाअत में ,ज़िला बहावलपुर में उनकी जमाअत थी, इस में सेक्रेटरी माल के तौर पर सेवा की तौफ़ीक़ मिली। मरहूम बड़े नेक, सालेह , शरीफ़, मेहमान नवाज़, एक हमदर्द इन्सान थे। रिश्तेदारों और मुहल्ला वालों से ग़रीबों से सम्बन्ध रखने वाले थे। ग़रीबों का ख़ामोशी से ख़्याल रखने वाले थे। उनके परिजनों में उनकी पत्नी सिद्दीक़ा बेगम साहिबा हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी क़ादिर बख़श साहिब की नवासी हैं। और मरहूम अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। इस के अतिरिक्त उनके परिजनों में, उनके पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त उनके बच्चे तीन बेटियां और दो बेटे हैं। और एक बेटे तो जैसा कि मैंने कहा वक़्फ़-ए-ज़िंदगी हैं। यहां मुरब्बी सिलसिला हैं। अरबी डैसक में सेवा कर रहे हैं। अल्लाह तआला मरहूम से क्षमा और रहम का व्यवहार फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे।

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत अली बिन अबी तालब ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद पहले दिन या दूसरे दिन हज़रत अबूबकर की बैअत कर ली थी और यही सच्च है क्योंकि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबूबकर को कभी नहीं छोड़ा और न ही उन्होंने हज़रत अबूबकर के पीछे नमाज़ की अदायगी छोड़ी

यदि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की समस्त ख़ूबीयों को नज़र अंदाज़ कर दिया जाए तो मेरे निकट ऐसी ख़तरनाक हालत में उनका ख़िलाफ़त को स्वीकार कर लेना ऐसे साहस और दिलेरी की बात थी जो अत्यधिक प्रशंसनीय थी कि उन्होंने अपनी इज़्ज़त और स्वयं की इस्लाम के मुक़ाबले में कोई पर्वा नहीं की और इतना बड़ा बोझ उठा लिया (अल्मुस्लेह मौउद रज़ियल्लाहु अन्हु)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ और दामाद अबू तुराब, हज़रत अली अल् मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के जीवन की विशेषताओं का वर्णन

मैं पाकिस्तान के अहमदियों को विशेषता यह भी कहूँगा कि दुआओं की ओर जिस प्रकार ध्यान देने की आवश्यकता है उस प्रकार ध्यान देने का अभी भी एहसास नहीं है अतः पहले से बढ़कर और बहुत बढ़कर दुआओं की ओर ध्यान दें, अल्लाह तआला हमें जल्द इन मुश्किलात से निकाले और आसानीयां पैदा फ़रमाए।

और हम वास्तविक इस्लाम का पैग़ाम आज़ादी के साथ पाकिस्तान में भी और संसार के प्रत्येक कोने में भी पहुंचाने वाले हों

अल-जज़ायर और पाकिस्तान में अहमदियों के अत्यधिक विरोध को दृष्टिगत रखते हुए विशेष दुआ की पुनः तहरीक।

चार मरहूमीन डाक्टर ताहिर अहमद साहिब आफ़ रब्बाह पुत्र चौधरी अबदूर्रज़्ज़ाक़ साहिब शहीद साबिक़ अमीर ज़िला नवाब शाह, श्रीमान हबीबउल्लाह मज़हर साहिब पुत्र श्रीमान चौधरी अल्लाह दत्ता साहिब,

श्रीमान ख़लीफ़ा बशीर-उद्दीन अहमद साहिब पुत्र डाक्टर ख़लीफ़ा तक़ी उद्दीन साहिब और श्रीमती अमीना अहमद साहिबा पत्नी श्रीमान ख़लीफ़ा रफ़ी उद्दीन अहमद साहिब का वर्णन और नमाज़े जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 18 दिसम्बर 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का वर्णन चल रहा था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अंतिम रोग में आप रज़ियल्लाहु अन्हु की सेवा का वर्णन इस प्रकार मिलता है। बुख़ारी में रिवायत है कि उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने वर्णन किया कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती थीं कि जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बीमार हो गए और आप अलैहिस्सलाम की बीमारी बढ़ गई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी पत्नियों से आज्ञा ली कि मेरे घर में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की देख भाल की जाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उन्होंने आज्ञा दे दी। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दो आदमियों के मध्य निकले। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पांव ज़मीन पर लकीर डाल रहे थे और आप हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु और एक दूसरे आदमी के मध्य थे अर्थात हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में ही थे और वहीं से आप मस्जिद जाने के लिए दो आदमीयों का सहारा लेकर बाहर आए। उबैदुल्लाह ने कहा कि मैंने इस बात का वर्णन हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से किया जो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कही थी तो उन्होंने कहा क्या तुम जानते हो वे कौन आदमी थे जिसका हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने नाम लिया था ? मैंने कहा नहीं। एक तो हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु थे जिनका हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने नाम लिया था और दूसरे आदमी जिसका नाम नहीं लिया था उन्होंने कहा कि वह हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु थे।

(सही बुख़ारी ,किताबुल इज़ान, बाब हद्दुल मरीज़ इन यशहद अल्जमाअत हदीस नम्बर 665)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हज़रत अली बिन अबू तालिब और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस बीमारी के दौरान जिस में आप फ़ौत हुए बाहर निकले। लोगों ने पूछा अबुल हसन ! आज सुबह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तबीयत कैसी है? उन्होंने कहा अलहमदु लिल्लाह। आज सुबह आपकी तबीयत अच्छी है। इस पर हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्लिब ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़ा और कहा अल्लाह की क़सम ! तुम तीन दिन के बाद किसी और के अधीन हो जाओगे क्योंकि ख़ुदा की कसम मैं देख रहा हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी इस बीमारी में शीघ्र फ़ौत हो जाऐंगे क्योंकि मौत के समय बनू अब्दुल्मुत्लिब के चेहरों की मुझे ख़ूब पहचान है। आओ हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट चलें और आप से पूछें कि यह मामला (अर्थात ख़िलाफ़त) किन में होगी? यदि हमारे में हुई तो हमें ज्ञात हो जाएगा और यदि यह हमारे अतिरिक्त किसी और में हुई तो भी हम यह बात जान लेंगे और आप इसके बारे में हमें कोई वसीयत कर जाऐंगे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा अल्लाह की क़सम यदि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह बात पूछी और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें यह सम्मान नहीं दिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद लोग हमें नहीं देंगे। ख़ुदा की कसम मैं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस के सम्बन्ध में नहीं पूछूँगा। (सही अल् बुख़ारी, किताब अल्मग़ाज़ी, मर्ज़ नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और वफ़ाता हदीस 4447 अनुवाद हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वलीऊल्लाह शाह साहिब,भाग 9 पृष्ठ 337-338)

यह भी बुख़ारी की रिवायत है। बुख़ारी में इस स्थान पर अरबी शब्द हैं। أَنْتَ وَاللّٰهِ بَعْدَ ثَلَاثٍ عَبْدُ الْعَصَا۔ इसके सम्बन्ध में हज़रत सय्यद वलीऊल्लाह शाह साहिब ने अपनी किताब में यह नोट दर्ज किया है कि यह उस व्यक्ति के लिए इशारा के तौर पर प्रयोग हुआ है जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद किसी और के अधीन हो जाएगा और अर्थ यह है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तीन दिन के बाद वफ़ात हो जाएगी। (सही बुख़ारी, मुतर्जिम अज़ हज़रत सय्यद ज़ैनुलआबेदीन वलीऊल्लाह साहिब, भाग 9 पृष्ठ 337 प्रकाशित नज़ारत ईशाअत रब्वाह)

हज़रत आमिर से रिवायत है कि (नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु , हज़रत फ़ज़ल रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उसामा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हु ने नहलाया और इन्हीं लोगों ने आप अलैहिस्सलाम को क़ब्र में उतारा और एक रिवायत में यह है कि उन्होंने आपके साथ हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु को भी दाख़िल किया।

(सुंन अबू दाऊद किताब अलजनायज़ बाब कम यदख़ेलू क़बर हदीस 3209)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत करने के बारे में विभिन्न रिवायतें आती हैं क्योंकि कुछ रिवायतों में यह है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूरी दिल की गहराई के साथ तुरन्त हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत कर ली थी। कुछ उस के ख़िलाफ़ लिखते हैं। बहरहाल हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मुहाजिरीन और अन्सार ने हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत कर ली तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु मंच पर चढ़े तो उन्होंने लोगों की ओर देखा तो उनमें हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को नहीं पाया। हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया। अन्सार में से कुछ लोग गए और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को ले आए। हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को संबोधित कर के फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाचा के बेटे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दामाद! क्या तुम मुसलमानों की ताक़त को तोड़ना चाहते हो? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने निवेदन किया : हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा ! गिरिफ़त न कीजिए। फिर उन्होंने हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत कर ली।

(सीरत अमीरुल मोमिनीन अली बिन अबी तालिब शख़्सीयता-और-आस्ता पृष्ठ 119 अल्फस्लु सानी अली बिन अबी तालिब फ़ी उहद अलख़ुलफ़ाए राशेदीन, दारुल मअरफत बेरूत लबनान 2006 ई। अल् सीरतुल नब्विया ले इब्ने कसीर पृष्ठ 693 वर्णन ذکر اعتراف سعد بن عبادة بصحة ما قاله الصدیق یوم السقیفة। दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2005 ई)

तारीख़ तिबरी में है कि हबीब बिन अबू साबित से यह रिवायत है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर में थे जब उनके निकट एक व्यक्ति आया और उनसे कहा गया कि हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु बैअत लेने के लिए तशरीफ़ फ़र्मा हैं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कमीज़ पहने हुए थे। जल्दी से इस हालत में बाहर निकले कि न ही उन पर इज़ार (भीतरी कपड़ा) था और न ही कोई चादर। आप इस बात को नापसन्द करते हुए निकले कि कहीं इस से देर न हो जाए यहां तक कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत की और हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट बैठ गए। फिर आप ने अपने कपड़े मंगवाए और वे कपड़े पहने। फिर हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की मज्लिस में ही बैठे रहे। (तारीख़ अत्तिबरी भाग 3 पृष्ठ 257 हदीस अलसकीफ़ा, प्रकाशित दारुल फ़िक्र लेबनान 2002ई)

अल्लामा इब्ने कसीर कहते हैं कि हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद पहले दिन या दूसरे दिन हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत कर ली थी। और यही सच्च है क्योंकि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु को कभी नहीं छोड़ा और न ही उन्होंने हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे नमाज़ की अदायगी छोड़ी। (अल् सीरतुल नब्विया ले इब्ने कसीर पृष्ठ 694 वर्णन اعتراف سعد بن عبادة بصحة ما قاله الصدیق یوم السقیفة। दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2005 ई)

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में फ़रमाते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अव्वल अव्वल हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत से भी इंकार किया था परन्तु फिर घर जा कर ख़ुदा जाने क्या ख़्याल आया कि पगड़ी भी नहीं बाँधी और तुरंत टोपी से ही बैअत करने को आ गए और पगड़ी पीछे मँगवाई। मालूम होता है कि उनके दिल में ख़्याल आ गया होगा कि यह तो बड़ा गुनाह है। इस वास्ते इतनी जल्दी की कि पगड़ी भी नहीं बाँधी। (उद्धरित मलफ़ूज़ात भाग 10 पृष्ठ 183 ऐडीशन 1984 ई)

अर्थात कपड़े भी पूरे नहीं पहने और जल्दी जल्दी आ गए।

दूसरी किस्म की रवायात में यह भी वर्णन हुआ है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के बाद हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत की थी जैसा कि बुख़ारी में है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात तक बैअत नहीं की थी।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल्मग़ाज़ी ग़ज़वाहा ख़ैबर हदीस 4240)

जबकि बहुत से उल्मा ने बुख़ारी में मौजूद इस रिवायत पर बहस की है। इसलिए इमाम बहीक़ी सुनन अल्कुबरा में इमाम शहाबुद्दीन ज़ोहरी की रिवायत का वर्णन करते हुए जिसमें उन्होंने यह वर्णन किया है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात तक नहीं की थी, लिखते हैं। इस का अनुवाद यह है कि इमाम ज़ोहरी की यह बात कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत से हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात तक रुके रहे यह गलत बात है और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत ज़्यादा सही है जिसमें यह वर्णित है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने सक़ीफ़ा के बाद होने वाली आम बैअत में हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर बैअत कर ली थी।

(सुन्न अल्कुबरा लिल्बेहीकी किताब قسم الفئ والغنیمة باب بیان مصرف اربعة اخماس الفئ بعد رسول الله हदीस12732)

और कुछ उल्मा ने बुख़ारी में मौजूद इस रिवायत का समर्थन इस प्रकार से किया है कि इस दूसरी बैअत को तजदीद बैअत का नाम दिया है। शायद उन उल्मा का यह विचार हो कि आख़िर कोई बात तो होगी इसलिए बुख़ारी जैसी किताब में इस रिवायत के महत्व के सम्मुख आवश्यक है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की इस दूसरी बैअत को कोई नाम दिया जाए। बहरहाल यह आवश्यक भी नहीं है कि बुख़ारी की सब रिवायतें ठीक ही हों। इसलिए डाक्टर अली मुहम्मद सलाबी अपनी किताब "सीरत अमीरुल मोमिनीन अली बिन अबी तालिब शख़्सीयतोहू व अस्रोहू" में लिखते करते हैं कि अल्लामा इब्ने कसीर और बहुत से इल्म वालों के निकट हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने छ: माह बाद जब हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात हुई अपनी बैअत की तजदीद की है। (सीरत अमीरुल मोमिनीन अली बिन अबी तालिब शख़्सीयतोहू व अस्रोहू पृष्ठ 121 المبحث الاول: علی بن ابی طالب فی عهد الصدیق الخ, दारुल मअरफत बेरूत 2006 ई)

उन्होंने उस का नाम तजदीद-ए-बैअत रख दिया है कि पहले बैअत तो कर ली थी और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के बाद दुबारा तजदीद की।

अल्लामा इब्ने कसीर लिखते हैं कि जब हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात हुई तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुनासिब समझा कि हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ अपनी बैअत की तजदीद करें। (अल् सीरतुल नब्विया ले इब्ने कसीर पृष्ठ 694 वर्णन एतराफ़ साअद बिन अबादह بصحة ما قاله الصدیق یوم السقیفة । दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत2005ई)

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी पुस्तक "सिर्रुल खिलाफा" में वर्णन फ़रमाते हैं जिसका उर्दू अनुवाद यह है अरबी की किताब है यह कि यदि हम यह मान भी लें कि सिद्दीक़ अकबर रज़ि उन लोगों में से (यह उनके बारे में फरमा रहे हैं जो हज़रत अबू बकर पर आरोप लगाते हैं और समझते हैं कि उस समय हज़रत अली को ख़लीफा होना चाहिए था) इस बात की वज़ाहत वर्णन करते हुए आप फ़रमाता हैं कि यदि हम यह मान भी लें कि सिद्दीक़ अकबर रज़ि उन लोगों में से थे जिन्होंने दुनिया और उसके सौन्दर्य को प्राथमिकता दी और उन पर राज़ी हो गए और वह ख़यानत करने वाले थे तो ऐसी स्थिति में हम इस बात पर मजबूर होंगे कि यह इक़रार करें कि शेरे ख़ुदा अली भी मुनाफ़िकों में सम्मिलित थे। और जैसा कि हम उनके बारे में समझते हैं वह दुनिया को त्याग कर अल्लाह से लौ लगाने वाले न थे बल्कि वे दुनिया पर गिरे हुए थे तथा उसके सौन्दर्य के अभिलाषी थे और उसकी सुन्दरताओं पर मुग्ध थे। इसी कारण से आप ने काफिर मुर्तदों का साथ न छोड़ा, (अर्थात यह काफ़िर कहते हैं न। हज़रत अबूबकर के बारे में बहुत सख़्त शब्द प्रयोग' किए जाते हैं) बल्कि चापलूसी करने वालों की तरह उनमें सम्मिलित रहे और लगभग तीस वर्ष की अवधि तक तक़िया किए रखा। फिर जब सिद्दीक़ अकबर रज़ि अली मुर्तज़ा रज़ि की नज़र में काफ़िर या अपहरणकर्ता (ग़ासिब) थे तो फिर क्यों वह उनकी बैअत पर सहमत हुए और क्यों उन्होंने अन्याय, उपद्रव और धर्म से विमुखता की भूमि से दूसरे देशों की ओर हिजरत (प्रवास) न की? क्या अल्लाह की पृथ्वी इतनी विशाल न थी कि वह उसमें हिजरत कर जाते जैसा कि यह संयम धारण करने वालों की सुन्नत है। वफ़ादार इब्राहीम अलैहिस्सलाम को देखो कि वह सच की गवाही में कैसे शक्तिशाली थे। जब उन्होंने देखा कि उन का बाप गुमराह हो गया और सच के मार्ग से भटक गया है, और यह देखा कि उनकी क़ौम मूर्तियों की पूजा कर रही है और वे रब्बुल आला को छोड़ बैठे हैं तो उन्होंने उन से मुंह फेर लिया और न डरे और न परवाह की। वे आग में डाले गए और उपद्रवियों की ओर से कष्ट दिए गए परन्तु उन्होंने उपद्रवियों के भय से तक़िय : (अर्थात किसी ज़ुल्म के डर से सच को छुपाना) नहीं किया। यह है नेक लोगों का

जीवन चरित्र कि वह तलवार और भालों से नहीं डरते और वे तक्रिय: को बड़ा गुनाह और निर्लज्जता और अत्याचार को सीमा से बढ़ जाना समझते हैं। यदि इन में से ग़लती के तौर पर एक कण भर भी हो जाए तो वे क्षमा माँगते हुए अल्लाह की ओर लौटते हैं। हमें आश्चर्य है कि हज़रत अली रज़ि ने यह जानते हुए भी कि सिद्दीक़ रज़ि और फ़ारूक रज़ि काफ़िर हो गए हैं और उन्होंने अधिकारों का हनन किया है उनकी बैअत कैसे कर ली। वह लम्बी आयु दोनों के साथ रहे और पूर्ण निष्कपटता और श्रद्धा पूर्वक उन दोनों का अनुकरण किया और (उसमें) न वह थके और न कमज़ोरी दिखाई और न ही किसी प्रकार की बददिली की अभिव्यक्ति की, न कोई कारण आड़े आया और न ही आप के ईमानी संयम ने आप को उस से रोका बावजूद इसके कि आप इन लोगों के फ़साद, कुफ्र और धर्म से विमुखता से अवगत थे। और आप के तथा अरब क़ौमों के मध्य न कोई बन्द दरवाज़ा था और न ही कोई बड़ी रोक और न ही आप क़ैदियों में से थे। आप पर यह आवश्यक था कि आप किसी दूसरे अरब क्षेत्र और पूरब और पश्चिम के किसी भाग की ओर हिजरत कर जाते और लोगों को युद्ध पर उकसाते और खाना-बदोशों को लड़ाई पर जोश दिलाते और सरस वर्णन शैली से उन्हें आज्ञाकारी बना लेते तथा फिर मुर्तद होने वाले लोगों से युद्ध करते। मुसैलमा कज़्ज़ाब के पास लगभग एक लाख ख़ानाबदोश एकत्र हो गए थे, जबकि अली रज़ि इस सहायता के अधिक अधिकारी थे और इस जंग के लिए अधिक उचित थे। फिर क्यों आप ने दोनों काफ़िरों का अनुकरण किया और उन से प्रेम व्यक्त किया और सुस्त लोगों की तरह बैठे रहे और मुजाहिदों की तरह न उठ खड़े हुए। वह कौन सी बात थी जिसने आप को समृद्धि और उत्थान के समस्त लक्षण होते हुए भी उस से निकलने से रोके रखा। आप युद्ध और लड़ाई तथा सच के समर्थन और लोगों का (इस्लाम की) दा'वत देने के लिए क्यों न उठ खड़े हुए। क्या आप क़ौम के सब से सरस और सुबोध उपदेशक तथा उन लोगों में से न थे जो शब्दों में जान डाल देते हैं। अपनी सुबोधता और प्रभावी वर्णन शैली के ज़ोर से तथा श्रोताओं के लिए अपने आकर्षणपूर्ण प्रभाव से लोगों को अपने पास एकत्र कर लेना आप के लिए मात्र एक घंटे बल्कि इस से भी बहुत कम समय का काम था। जब एक झूठे दज्जाल ने लोगों को एकत्र कर लिया तो ख़ुदा का शेर जिस की सहायता करने वाला कर्मठ रब्ब था और जो समस्त लोकों के प्रति पालक का प्रिय था क्यों न कर सका। फिर बहुत अदभुत एवं आश्चर्यजनक बात यह है कि आप ने केवल बैअत करने वालों में से होने पर बस नहीं किया बल्कि हर नमाज़ शैख़ैन (अबू बक्र रज़ि ़और उमर रज़ि ़) के पीछे अदा की और किसी समय भी उसमें विलम्ब नहीं किया और न ही गिला करने वालों की तरह उस से मुंह फेरा। आप उनकी शूरा (परामर्श समिति) में सम्मिलि त हुए और उन के दावे की पुष्टि की तथा हर मामले में अपनी पूरी हिम्मत और अपनी क्षमता के अनुसार शक्ति से उनकी सहायता की और पीछे रहने वालों में से न हुए। अत: विचार कर कि क्या पीड़ितों और काफ़िर कहे जाने वालों के यही लक्षण होते हैं? और इस पर भी विचार कर कि झूठ और इफ़्तिरा (झूठ गढ़ने) का ज्ञान होने के बावजूद वह (अली रज़ि़) झूठों का अनुकरण क्यों करते रहे। मानो कि सच और झूठ उनके नज़दीक एक समान थे। क्या आप यह नहीं जानते थे कि जो लोग सामर्थ्यवान और शक्तिमान अस्तित्व पर भरोसा करते हैं। वे एक पल के लि ए भी चाटुकारिता को महत्त्व नहीं देते, चाहे वे कितने ही विवश हों और वे सच को नहीं छोड़ते चाहे सच उन्हें जला दे और उन्हें तबाही में डाल दे और उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दे।

(सिर्रुल ख़िलाफ़:(ख़िलाफ़त का रहस्य), रुहानी ख़ज़ाइन भाग 8 पृष्ठ 349 से 351 उर्दू अनुवाद उद्धरित सिर्रुल ख़िलाफ़: पृष्ठ 86 से 91 प्रकाशित नज़ारत ईशाअत रब्वाह)

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट फ़र्मा दिया कि हज़रत अली ने कभी भी अपने से पहले खुलफा की मुख़ालिफ़त नहीं की थी बल्कि उनकी बैअत की अन्यथा जो बातें तुम हज़रत अली के बारे में कहते हो कि उन्होंने हज़रत अबूबकर की बैअत नहीं की यह बात तो हज़रत अली के स्थान को गिराती है न कि बढ़ाए।

तीसरे खलीफा के समय में हज़रत अली की क्या सेवाएं थीं अर्थात आप से पहले जो तीनों खलीफ़ा गुज़रे हैं जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई तो अरब के बहुत से क़बीले मुर्तद हो गए और मदीना में भी मुनाफ़क़ीन ने सिर उठाया और बनू हनीफा और यमामा के बहुत ज़्यादा लोग मुसैलमा कज़्ज़ाब के साथ मिल गए जबकि क़बीला बनू असद और तय और अन्य बहुत से लोग तल्हा असदी के निकट इकट्ठे हो गए उसने भी मुसैलमा के प्रकार नबुव्वत का दावा कर दिया था। मुसीबत बहुत बढ़ गई और सूरते-हाल अत्यधिक बिगड़ गई। ऐसे में जब हज़रत अबू बकर ने हज़रत उसामा के लश्कर को रवाना किया तो आपके पास बहुत कम लोग रह गए थे इस पर बहुत से बद्दूओं का मदीना पर क़बज़ा के लिए दिल ललचाया और उन्हूँने मदीना पर आक्रमण करने की योजना बनाई इस पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने मदीना में दाख़िल होने वाले विभिन्न रास्तों पर मदीना के इर्द-गिर्द पहरेदार निर्धारित कर दिए जो अपने दस्तों के साथ मदीना के इर्द-गिर्द पहरा देते हुए रात गुज़ारते थे। इन पहरा दारों की निगरानी के निगरानों में से हज़रत अली बिन अबी तालिब, ज़ुबैर बिन अवाम, तल्हा बिन अब्दुल्लाह, साद बिन अबी विक़ास, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और अब्दुल्लाह बिन मसऊद थे।

(अलबदाया वन्नाहाया भाग 7 पृष्ठ 307-308 दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2001ई)

अर्थात फ़ौज का जो एक हिस्सा था, जो हिफ़ाज़त के लिए निर्धारित किया गया था हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु उस समय भी उस के निगरान थे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात की जब आम ख़बर फैली तो अरब के अक्सर क़बीले मुर्तद हो गए और ज़कात की अदायगी से भागने लगे। हज़रत अबूबकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे जंग करने का इरादा किया। उर्वा का वर्णन है कि हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहु अन्हु मुहाजिरीन और अन्सार को साथ लेकर मदीना से रवाना हुए और जब नजद के बुलंद इलाक़े के आमने सामने एक तालाब पर पहुंचे तो बद्दू वहां से अपने बाल बच्चों सहित शीघ्र खड़े हुए। असल में तो यह है कि एक ओर मुस्लमान होने का भी दा'वा था, पूरी तरह मुर्तद भी नहीं थे और दूसरी ओर ज़कात देने से भी इंकारी थे इसलिए जंग की गई थी। यह नहीं है कि मुर्तद होने की कारण से उनको सज़ा मिल रही थी। इस पर जब वे शीघ्र खड़े हुए तो इस पर लोगों ने हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से निवेदन किया कि अपने बच्चों और महिलाओं के निकट वापस मदीना लौट चलें और लश्कर पर किसी व्यक्ति को अमीर बना दें। लोगों के इसरार पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को लश्कर का अमीर निर्धारित किया और उनसे फ़रमाया कि यदि वे लोग इस्लाम ले आएं और ज़कात दें तो तुम में से जो वापस आना चाहे अर्थात बैअत में आ जाएं और ज़कात दें तो जो वापस आना चाहे वे आ जाए। इस के बाद हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना लौट आए।

(तारीख़ खुलफा जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान सूती पृष्ठ 61 ख़लीफा अव्वल अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, फ़सल फी मा वक़ाआ फ़ी खिलाफ़त)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "इतिहास से साबित है कि हज़रत उमर रज़ि ने अपने ज़माना ख़िलाफ़त में कुछ यात्राओं के करने पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने स्थान पर मदीना का अमीर निर्धारित फ़रमाया था। इसलिए तारीख़ तिबरी में लिखा है कि घटना जसर के अवसर पर जो मुसलमानों को ईरानी फ़ौजों के मुक़ाबला पर एक प्रकार का अपमान उठाना पड़ा तो हज़रत उमर रज़ि ने लोगों के मश्वरा से इरादा किया कि आप ख़ुद इस्लामी फ़ौज के साथ ईरान की सरहद पर तशरीफ़ ले जाएं तो आपने अपने पीछे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना का गवर्नर निर्धारित किया।"

(हक़्क़ुल यक़ीन, अन्वारुल ऊलूम भाग 9 पृष्ठ 383-384)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "सबसे बड़ी और भयावह पराजय जो इस्लाम को पेश आई वह जंगे जसर थी। ईरानयों के मुक़ाबला में मुसलमानों का ज़बरदस्त लश्कर गया। ईरानी कमांडर ने दरिया पार अपने मोर्चे बनाए और उनकी प्रतीक्षा की। इस्लामी लश्कर ने जोश में बढ़कर उन पर आक्रमण किया और धकेलते हुए आगे निकल गए परन्तु यह ईरानी कमांडर की चाल थी। उसने एक फ़ौज बाज़ू से भेज कर'' अर्थात एक साईड से भेज कर "पुल पर क़ब्ज़ा कर लिया और ताज़ा आक्रमण मुसलमानों पर कर दिया। मुस्लमान मस्लिहतन पीछे लौटे देखा कि पुल पर दुश्मन का क़ब्ज़ा है। घबरा कर दूसरी ओर हुए तो दुश्मन ने भयंकर आक्रमण कर दिया और मुसलमानों की बड़ी संख्या दरिया में कूदने पर मजबूर हो गई और हलाक भी हो गई। मुसलमानों का यह नुक़्सान ऐसा ख़तरनाक था कि मदीना तक इस से हिल गया। हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मदीना वालों को जमा किया और फ़रमाया अब मदीना और ईरान के मध्य कोई रोक बाक़ी नहीं। मदीना बिल्कुल नंगा है और संभव है कि दुश्मन कुछ दिनों तक यहां पहुंच जाए इस लिए मैं ख़ुद कमांडर बन कर जाना चाहता हूँ। बाक़ी लोगों ने तो इस परामर्श को पसन्द किया परन्तु हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि यदि

ख़ुदा न करे आप रज़ियल्लाहु अन्हु काम आ गए "शहीद हो गए" तो मुस्लमान तितर बित्तर हो जाऐंगे और उनका शीराज़ा बिल्कुल बिघर जाएगा। इस लिए किसी और को भेजना चाहिए आप ख़ुद तशरीफ़ न ले जाएं। इस पर हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत साअद रज़ियल्लाहु अन्हु को जो शाम में रोमयों से जंग में व्यस्त थे लिखा कि तुम जितना लश्कर भेज सकते हो भेज दो क्योंकि इस समय मदीना बिल्कुल नंगा हो चुका है और यदि दुश्मन को फ़ौरी तौर पर नहीं रोका गया तो वह मदीना पर क़ाबिज़ हो जाएगा।"

(मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया के सालाना इजतिमा में कुछ महत्वपूर्ण हिदायत, अनवारुल ऊलूम भाग 22 पृष्ठ 56-57)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के समय में फ़ित्ना-और-फ़साद हुआ तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनका रफ़ा करने के लिए उनको मुख़लिसाना मश्वरे दिए। एक बार हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे पूछा कि मुल्क में मौजूद उपद्रव और हंगामे का वास्तविक कारण और इस के रफ़ा करने की सूरत क्या है? उन्होंने (हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने) निहायत ख़ुलूस और आज़ादी से ज़ाहिर कर दिया कि मौजूदा समस्त बेचैनी आप रज़ियल्लाहु अन्हु की आम बेज़ारी के कारण से है। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने उम्माल के चुनाव में इन्ही विशेषताओं को दृष्टिगत रखा है जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दृष्टिगत थे फिर उनसे आम विमुखता का कारण समझ में नहीं आता। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हाँ यह सही है लेकिन हज़रत उमर रज़ि ने सब की तकमील अपने हाथ में दे रखी थी और गिरिफ़त ऐसी सख़्त थी कि अरब का सरकश से सरकश ऊंट भी बुलबुला उठता। बड़ी सख़्ती से निगरानी रखी हुई थी। बरख़िलाफ़ इसके आप रज़ियल्लाहु अन्हु आवश्यकता से ज़्यादा नरम हैं। आप के उम्माल उस नरमी से फ़ायदा उठा कर मन-मानी कार्यवाहीयां करते हैं और आपको उस की ख़बर भी नहीं होने पाती। जनता समझती है कि उम्माल जो कुछ करते हैं वे सब दरबारे ख़िलाफ़त के आदेशों की पूर्णता है। इस प्रकार समस्त बे-इन्सफियों का केंद्र आप को बनना पड़ता है।

जब मिस्रियों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर का घिराव कर लिया और इस क़दर शिद्दत इख़तियार की कि खाने पीने से भी वंचित कर दिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को मालूम हुआ तो घिराव करने वालों के निकट गए और फ़रमाया तुम लोगों ने जिस किस्म का घिराव स्थापित किया है वह न केवल इस्लाम बल्कि इन्सानियत के भी ख़िलाफ़ है। कुफ़्फ़ार भी मुसलमानों को क़ैद कर लेते हैं तो खाने पीने से वंचित नहीं करते। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में फ़रमाया कि इस व्यक्ति ने तुम्हारा क्या नुक़्सान किया है जो ऐसी सख़्ती कर रहे हो। घेराव करने वालो ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की सिफ़ारिश की कुछ पर्वा नहीं की और घेराव में सहूलत पैदा करने से पूर्णता इन्कार कर दिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ग़ुस्सा में अपना इमामा फेंक कर वापस चले गए।

(उद्धरित अज़ सैर साहाबा भाग 1 पृष्ठ 207-208 अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लामी क़ुतुबख़ाना उर्दू बाज़ार लाहौर)

लोगों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर का घिराव कर लिया। उनका पानी बंद कर दिया। इस पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने (हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने) ऊपर से झांक कर देखा। उन्होंने कहा क्या तुम लोगों में अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) है? लोगों ने कहा नहीं। फिर पूछा साअद (रज़ियल्लाहु अन्हु) हैं? उत्तर मिला नहीं। फिर कुछ देर ख़ामोश रह कर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा क्या तुम में से कोई है जो अली रज़ियल्लाहु अन्हु से जा कर कहे कि वह हमें पानी पिलाऐं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को यह सूचना हुई तो उन्होंने पानी की भरी हुई तीन मशकें आपके घर रवाना कीं परन्तु बाग़ीयों के विरोध के कारण से ये मशकें हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर नहीं पहुंच रही थीं, उनको ले जाने नहीं दे रहे थे। इन मश्कों को पहुंचाने की कोशिश में बनू हाशिम और बनू उमय्या रज़ियल्लाहु अन्हु के कई ग़ुलाम ज़ख़्मी हुए फिर भी पानी अंतत: हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर पहुंच गया।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को जब मालूम हुआ कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़तल का मन्सूबा है तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने पुत्रों इमाम हस्न (रज़ियल्लाहु अन्हु) और इमाम हुसेन (रज़ियल्लाहु अन्हु) से फ़रमाया : अपनी तलवारें लेकर जाओ और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के दरवाज़े पर खड़े हो जाओ और ख़बरदार कोई पुकारने वाला आप (रज़ियल्लाहु अन्हु) तक पहुंचने न पाए। यह देखकर बाग़ीयों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर के दरवाज़े पर तीर अंदाज़ी शुरू कर दी जिससे हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु और मुहम्मद बिन तल्हा लहूलुहान हो गए। इसी समय में मुहम्मद बिन अबूबकर दो साथीयों समेत एक अन्सारी के घर की ओर से छुप कर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में कूदे और आप रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद कर दिया। जब यह ख़बर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को पहुंची तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने आकर देखा कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु वास्तव में शहीद कर दिए गए हैं। इस पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने बेटों से पूछा। तुम दोनों के दरवाज़े पर पेहरादार होने के बावजूद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु किस प्रकार शहीद कर दिए गए? यह कह कर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को थप्पड़ मारा और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के सीने पर हाथ मारा और मुहम्मद बिन तल्हा और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर को बुरा भला कहा और क्रोध की हालत में वहां से आप घर लौट आए।

(तारीख़ुल खुलफा जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर अस्सयूती पृष्ठ 123-124 दारुल किताब अल्अरबी बेरूत लबनान 1999 ई)

शद्दाद बिन ओस रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि यौमुद्दार को जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घेराव ने शिद्दत इख़तियार कर ली। (यौमुद्दार उस दिन को कहा जाता है जिस दिन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को बाग़ीयों ने अपने घर में कैद कर के इंतिहाई बेदर्दी से शहीद कर दिया था) तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों को झांक कर देखा और फ़रमाया हे अल्लाह के बंदो रावी कहते हैं इस पर मैंने देखा कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर से बाहर निकल रहे हैं और उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इमामा बाँधा हुआ है और अपनी तलवार लटकाई हुई है। उनके आगे मुहाजिरीन और अन्सार का गिरोह था जिसमें हज़रत हस्न रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। यहां तक कि उन्होंने बाग़ीयों पर आक्रमण कर के उन्हें वहां से हटा दिया। फिर ये लोग हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में दाख़िल हुए और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि हे अमीरुल मौमेनीन आप पर सलामती हो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दीन की बुलंदी और मज़बूती उस समय हासिल हुई जब आपने मानने वालों को साथ लेकर इंकार करने वालो से जंग की। ख़ुदा की कसम मैं देखता हूं कि ये लोग आपको ज़रूर क़तल करने वाले हैं। अत: आप हमें उनसे लड़ाई करने का हुक्म दें। इस पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया प्रत्येक उस व्यक्ति को जो अल्लाह को हक़ समझता है और इक़रार करता है कि मेरा उस पर हक़ है मैं अल्लाह का वास्ता देता हूँ कि वह मेरी ख़ातिर न किसी का सींगी बराबर ख़ून बहाए और न मेरी ख़ातिर अपना ख़ून बहाए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने दुबारा वही निवेदन किया जिस पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने वही उत्तर दिया। रावी कहते हैं इस पर मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर से निकलते हुए देखा जबकि वह कह रहे थे कि हे अल्लाह! तू जानता है कि हमने अपनी समस्त कोशिशें केवल कर डाली हैं। फिर आप मस्जिद नबवी में पधारे नमाज़ का समय हो चुका था। लोगों ने आप से कहा हे अबुलहसन! आगे बढ़ो और लोगों को नमाज़ पढ़ा दो। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं तुम लोगों को नमाज़ नहीं पढ़ा सकता जबकि इमाम कैद किया हुआ है, मैं अकेले नमाज़ पढ़ लूँगा। फिर आप रज़ियल्लाहु अकेले नमाज़ पढ़ कर वापस चले गए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का बेटा आया और उसने आप से कहा हे पिता ! ख़ुदा की कसम मुख़ालिफ़ीन ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर पर आक्रमण कर दिया है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। ख़ुदा की क़सम वह उन्हें क़तल कर देंगे। लोगों ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु कहाँ होंगे अर्थात शहादत के बाद। फ़रमाया अल्लाह की क़सम जन्नत में। लोगों ने पूछा और ये लोग कहाँ होंगे जिन्हों ने क़त्ल किया है? हे अबुल हसन ये लोग कहाँ होंगे? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम आग में। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीन बार यह कहा।

(रियाज़ुंनज़र फ़ी मनाक़िब अल्अश्रा भाग 3 पृष्ठ 68-69 अल्बाब सालिस फ़ी मनाक़िब अमीरुल मोमिनीन उस्मान बिन उफान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। अल्फस्लुल हादी अश्र فی مقتلہ وما یتعلق بہ। दारुल कुतुब अल्इल्मिया 1984 ई)

बाग़ियों ने जब मदीना का घेराव कर लिया तो उन हालात का वर्णन करते हुए

हज़रत मुस्लेह मौऊद वर्णन फ़रमाते हैं कि "मिस्र वाले हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट गए। वह उस समय मदीना से बाहर एक हिस्सा लश्कर की कमान कर रहे थे और उस का सिर कुचलने पर आमादा खड़े थे। उन लोगों ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट पहुंच कर अर्ज़ किया कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बुरी व्यवस्था के कारण अब ख़िलाफ़त के योग्य नहीं हम उनको अलग करने के लिए आए हैं और उम्मीद करते हैं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु उनके बाद इस पद को स्वीकार करेंगे। उन्होंने उनकी बात सुनकर उस धार्मिक ग़ैरत से "अर्थात हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुनाफ़क़ीन की बात सुनकर" उस धार्मिक ग़ैरत से काम लेकर जो आप रज़ियल्लाहु अन्हु के रुत्बा के आदमी का हक़ था उन लोगों को धुतकार दिया और बहुत सख़्ती से पेश आए और फ़रमाया कि सब नेक लोग जानते हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पेशगोई के तौर पर ज़ुलम्रवाह और ज़ूख़ुशुब (जहां उन लोगों का डेरा था) पर डेरा लगाने वाले लश्करों का वर्णन फ़र्मा कर उन पर लानत फ़रमाई थी।

(अलबदायाह वल्नाहाया भाग 7 पृष्ठ 174 प्रकाशित बेरूत 1966 ई)

अत: ख़ुदा तुम्हारा बुरा करे तुम वापस चले जाओ। इस पर उन लोगों ने कहा बहुत अच्छा। हम वापस चले जाऐंगे और यह कह कर वापस चले गए।'

(इस्लाम में मतभेदों का आग़ाज़, अनवारुल ऊलूम भाग 4 पृष्ठ 299)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत और इस के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के जो बैअत ख़िलाफ़त है इस के बारे में वर्णन कहीं पहले भी मैं एक बार संक्षेप में वर्णन कर चुका हों। बहरहाल पहले विस्तार से किया था। अब यहां थोड़ा सी घटना संक्षेप में बता देता हूँ। जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हुए तो समस्त लोग हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर दौड़ते हुए आए जिन में सहाबा और अन्य लोग भी शामिल थे। वे सब यही कह रहे थे कि अली रज़ियल्लाहु अन्हु अमीरुल मोमिनीन हैं। वह आपके निकट आप के घर हाज़िर हुए और कहा कि हम आपकी बैअत करते हैं आप अपना हाथ बढ़ाईं क्योंकि आप इस बात के सबसे ज़्यादा हक़दार हैं। इस पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया यह तुम्हारा काम नहीं है बल्कि यह अस्हाबे बदर का काम है। अत: जिसके बारे में अस्हाबे बदर राज़ी होंगे वही ख़लीफ़ा होगा। इस पर सभी लोग हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के सेवा में हाज़िर हुए और निवेदन किया कि हम किसी को आपसे ज़्यादा इस बात का योग्य नहीं समझते। अत: अपना हाथ आगे करें कि हम आपकी बैअत करें। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और ज़ुबैर कहाँ हैं। फिर सबसे पहले हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़बानी बैअत की और सबसे पहले हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु की दस्ती बैअत की। जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह देखा तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद की ओर निकले और मिंबर पर चढ़े। हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु सब से पहले व्यक्ति थे जो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर मिंबर पर चढ़े और आप रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत की उनके बाद हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बैअत की और फिर बाक़ी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने बैअत की।

(उसोदुल ग़ाबाह फी माअरिफतुल सहाबा लेइब्ने असीर भाग 1 पृष्ठ 107 वर्णन अली बिन अबी तालिब, दरुल्कुतुब अल्इल्मिया लबनान 2008 ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद की घटनाओं का जो वर्णन किया है इस में जिस प्रकार आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन फ़रमाया वह इस प्रकार है कि जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद कर दिया गया तो मुफसिदों ने बैयतुल माल को लूटा और ऐलान कर दिया कि जो मुक़ाबला करेगा क़तल कर दिया जाएगा। लोगों को जमा नहीं होने दिया जाता था, कोई इकट्ठा नहीं हो सकता था। जिस प्रकार आजकल दफ़ा 144 लगती है इस प्रकार लगा दी थी और मदीना का उन्होंने सख़्त घिराव कर रखा था और किसी को बाहर नहीं निकलने दिया जाता था या कहना चाहिए कर्फ़्यू जिस प्रकार लगता है उस प्रकार लगा दिया था यहाँ तक कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु जिनकी मुहब्बत का वे लोग दा'वा करते थे उनको भी रोक दिया गया था और मदीना में ख़ूब लूट मचाई। उधर तो यह हालत थी और इधर उन्होंने अपने कठोर हृदय का यहां तक सबूत दिया कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे पवित्र इन्सान को जिनकी रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़ी प्रशंसा की है क़तल करने के बाद भी न छोड़ा और लाश को तीन चार दिन तक दफ़न नहीं करने दिया। आख़िर कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने मिलकर रात को पोशीदा तौर पर दफ़न किया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ ही कुछ ग़ुलाम भी शहीद हुए थे। उनकी लाशों को दफ़न करने से रोक दिया और कुत्तों के आगे डाल दिया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और ग़ुलामों के साथ यह व्यवहार करने के बाद मुफसिदों ने मदीना के लोगों को जिनके साथ उनकी कोई मुख़ालिफ़त नहीं थी छुट्टी दे दी और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने वहां से भागना शुरू कर दिया। पाँच दिन इसी प्रकार गुज़र गए कि मदीना का कोई हाकिम नहीं था। मुफ़सिद इस कोशिश में लगे हुए थे कि किसी को ख़ुद ख़लीफ़ा बनाएँ और जिस प्रकार चाहें उस से करवाएं लेकिन सहाबा में से किसी ने यह बर्दाश्त नहीं किया कि वे लोग जिन्होंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को क़तल किया है उनका ख़लीफ़ा बने। मुफ़सिद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट बारी बारी गए और उन्हें ख़लीफ़ा बनने के लिए कहा परन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया। जब उन्होंने इन्कार कर दिया और मुस्लमान उनकी मौजूदगी में और किसी को ख़लीफ़ा नहीं मान सकते थे तो मुफसिदों ने उनके सम्बन्ध में भी जबर से काम लेना शुरू कर दिया क्योंकि उन्होंने ख़्याल किया कि यदि कोई ख़लीफ़ा न बना तो समस्त इस्लामी जगत में हमारे ख़िलाफ़ एक तूफ़ान बरपा हो जाएगा। उन्होंने ऐलान कर दिया कि यदि दो दिन के अन्दर अन्दर कोई ख़लीफ़ा बना लिया जाए तो बेहतर अन्यथा हम अली रज़ियल्लाहु अन्हु, तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु और सब बड़े बड़े लोगों को क़तल कर देंगे। इस पर मदीना वालों को ख़तरा पैदा हुआ कि वे लोग जिन्होंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को क़तल कर दिया वे हम से और हमारे बच्चों और महिलाओं से क्या कुछ न करेंगे। वे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट गए और उन्हें ख़लीफ़ा बनने के लिए कहा परन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया और कहा कि यदि मैं ख़लीफ़ा हुआ तो समस्त लोग यही कहेंगे कि मैंने उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को क़तल करवाया है और यह बोझ मुझ से नहीं उठ सकता। यही बात हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कही और सहाबा ने भी जिन को ख़लीफ़ा बनने के लिए कहा गया इन्कार कर दिया। आख़िर सब लोग फिर अली रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट गए और कहा जिस प्रकार भी हो आप रज़ियल्लाहु अन्हु यह बोझ उठाएं। आख़िर उन्होंने कहा कि मैं इस शर्त पर यह बोझ उठाता हूँ कि सब लोग मस्जिद में जमा हों और मुझे स्वीकार करें। इसलिए लोग जमा हुए और उन्होंने स्वीकार किया परन्तु कुछ ने इस पर इन्कार कर दिया कि जब तक हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिलों को सज़ा न दी जाए उस समय तक हम किसी को ख़लीफ़ा नहीं मानेंगे और कुछ ने कहा जब तक बाहर के लोगों की राय न मालूम हो जाए कोई ख़लीफ़ा नहीं होना चाहिए परन्तु ऐसे लोगों की संख्या बहुत थोड़ी थी। इस प्रकार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़लीफ़ा बनना तो स्वीकार कर लिया परन्तु वही परिणाम हुआ जिस का उन्हें ख़तरा था। समस्त इस्लामी जगत ने यह कहना शुरू कर दिया कि अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को क़तल करवाया है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की यदि और समस्त ख़ूबियों को नज़र अंदाज़ कर दिया जाए तो मेरे निकट ऐसे ख़तरनाक हालत में उनका ख़िलाफ़त को स्वीकार कर लेना ऐसे साहस और दिलेरी की बात थी जो अत्यधिक प्रशंसा के योग्य थी कि उन्होंने अपनी इज़्ज़त और अपनी ज़ात की इस्लाम के मुक़ाबले में कोई पर्वा नहीं की और इतना बड़ा बोझ उठा लिया।

(उद्धरित घटनाएं ख़िलाफ़त ऊला, अन्वारुल ऊलूम भाग 4 पृष्ठ 635-637)

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद के घटनाओं में एक और स्थान वर्णन करते हुए इस प्रकार फ़रमाते हैं कि "एक दो दिन तो ख़ूब लूट मार का बाज़ार गर्म रहा लेकिन जब जोश ठंडा हुआ तो उन बाग़ियों को अपने अंजाम का फ़िक्र हुआ और डरे कि अब क्या होगा। इसलिए कुछ तो यह समझ कर कि हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु एक ज़बरदस्त आदमी हैं और ज़रूर इस क़तल का बदला लेंगे शाम का रुख किया और वहां जा कर ख़ुद ही रोना धोना शुरू कर दिया कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हो गए और कोई उनका बदला नहीं लेता। कुछ भाग कर मक्का के रास्ते में हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हु से जा मिले और कहा कि कितना अत्याचार है कि इस्लाम का ख़लीफ़ा शहीद किया जाए और मुस्लमान ख़ामोश रहें। कुछ जल्द कर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट पहुंचे और कहा कि इस समय मुसीबत का समय

है इस्लामी हुकूमत के टूट जाने का अंदेशा है आप रज़ियल्लाहु अन्हु बैअत लें ताकि लोगों का ख़ौफ़ दूर हो और अमन तथा शान्ति स्थापित हो। जो सहाबा मदीना में मौजूद थे उन्होंने भी आपसी सहमति यही मश्वरा दिया कि इस समय यही मुनासिब है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु इस बोझ को अपने सिर पर रखें कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु का यह काम सवाब का कारण और ख़ुदा की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए होगा। जब चारों ओर से आप रज़ियल्लाहु अन्हु को मजबूर किया गया तो कई बार इन्कार करने के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने मजबूरन इस काम को अपने ज़िम्मा लिया और बैअत ली। इस में कोई संदेह नहीं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का यह कार्य बड़ी हिक्मत पर आधारित था। यदि आप रज़ियल्लाहु अन्हु उस समय बैअत नहीं लेते तो इस्लाम को इस से भी ज़्यादा नुक़्सान पहुंचता जो आपकी और हज़रत मुआवीया की जंग से पहुंचा।''

(अनवारे ख़िलाफ़त, अन्वारुल ऊलूम भाग 3 पृष्ठ 197-198)

यह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने परिणाम निकाला है। फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि याद रखना चाहिए कि हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु के सम्बन्ध में जो यह कहा जाता है कि उन्होंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बैअत को तोड़ा यह ग़लत विमर्श है। यह जो था बैअत कर ली और आराम से बैअत कर ली तो वह इतनी आराम से नहीं हुई थी। इस का विस्तार से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस प्रकार वर्णन करते हैं कि फिर बैअत को तोड़ कर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ चले गए या उनके ख़िलाफ़ जंग की। इस के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद लिखते हैं। यह ग़लत विमर्श और तारीख़ से ना वाक़फ़ीयत का सबूत है। इस प्रकार नहीं हुआ। तारीखें इस बात पर एक साथ गवाह हैं कि हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की जो बैअत की थी वह बैअत ख़ुशी से नहीं थी बल्कि ज़बरदस्ती उनसे बैअत ली गई थी। इसलिए मुहम्मद और तल्हा दो रावियों से तिबरी में यह रिवायत आती है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु जब शहीद हो गए तो लोगों ने आपस में मश्वरा कर के फ़ैसला किया कि शीघ्र किसी को ख़लीफ़ा निर्धारित किया जाए ताकि अमन स्थापित हो और उपद्रव मिटे। आख़िर लोग हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट गए और उनसे नि?दन किया कि आप हमारी बैअत लें। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि यदि तुमने मेरी बैअत करनी है तो तुम्हें हमेशा मेरी फ़रमांबर्दारी करनी पड़ेगी। यदि यह बात तुम्हें स्वीकार है तो मैं तुम्हारी बैअत लेने के लिए तैयार हूँ अन्यथा किसी और को अपना ख़लीफ़ा निर्धारित कर लो मैं उस का हमेशा आज्ञाकारी रहूँगा और तुम से ज़्यादा उस की इताअत करूँगा जो भी ख़लीफ़ा होगा। उन्होंने कहा कि हमें आप रज़ियल्लाहु अन्हु की इताअत स्वीकार है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि फिर सोच लो और आपस में मश्वरा कर लो। इसलिए उन्होंने मश्वरे से यह तय किया कि हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु यदि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत कर लें तो सब लोग हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत कर लेंगे अन्यथा जब तक वह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के बैअत नहीं करेंगे उस समय तक पूरे तौर शांति स्थापित नहीं होगा। इस पर हकीम बिन जबल को कुछ आदमियों के साथ हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर और मालिक अशतर को कुछ आदमीयों के साथ हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर रवाना किया गया जिन्हों ने तलवारों का निशाना कर के उन्हें बैअत पर आमादा किया अर्थात वे तलवारें सौंत कर उनके सामने खड़े हो गए और उन्होंने कहा कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत करनी है तो करो अन्यथा अभी हम तुमको मार डालेंगे। इसलिए उन्होंने मजबूर हो कर रजामंदी का इज़हार कर दिया और ये वापस आ गए। दूसरे दिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मंच पर चढ़े और फ़रमाया हे लोगो तुमने कल मुझे एक पैग़ाम दिया था और मैंने कहा था कि तुम इस पर ध्यान देना। क्या तुम ने ध्यान दिया है और क्या तुम मेरी कल वाली बात पर स्थापित हो? यदि स्थापित हो तो याद रखो कि तुम्हें मेरी पूर्ण फ़रमांबर्दारी करनी पड़ेगी। इस पर वह फिर हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट गए और उनको ज़बरदस्ती खींच कर लाए और रिवायत में साफ़ लिखा है कि जब वो हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट पहुंचे और उनसे बैअत करने के लिए कहा तो उन्होंने उत्तर दिया। اِنِّیۡۤ اِنَّمَاۤ اُبَایِعُ کَرۡھًا । देखो मैं ज़बरदस्ती बैअत कर रहा हूँ। ख़ुशी से बैअत नहीं कर रहा। इसी प्रकार हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट जब लोग गए और बैअत के लिए कहा तो उन्होंने भी यही उत्तर दिया कि اِنِّیۡۤ اِنَّمَاۤ اُبَایِعُ کَرۡھًا । कि तुम मुझ को मजबूर कर के बैअत करवा रहे हो, दिल से मैं यह बैअत नहीं कर रहा। इस प्रकार अब्दुर्रहमान बिन जुन्दुब अपने बाप से रिवायत करते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़तल के बाद अशतर, तल्हा के निकट गए और बैअत के लिए कहा। उन्होंने कहा कि मुझे मोहलत दो। मैं देखना चाहता हूँ कि लोग क्या फ़ैसला करते हैं। परन्तु उन्होंने न छोड़ा और جَاءَ بِهٖ یَتُلُّهٗ تَلًّا عَنِیۡفًا ۔ उनको ज़मीन पर निहायत सख़्ती से घसीटते हुए ले आए जैसे बकरे को घसीटा जाता है।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 18 पृष्ठ 300-302)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु जिस समय एक बाहमी मतभेद के अवसर पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के मुकाबले पर खड़े हुए और फिर जब उनकी समझ में यह बात आ गई कि इस में मेरी ग़लती थी तो वह मैदाने जंग से चले गए।" यहां यह क़िस्सा अब शुरू होता है कि हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु मुक़ाबले पर आए और बैअत नहीं की लेकिन इस को विस्तार से भी वर्णन फ़रमाते हैं, आप रज़ियल्लाहु अन्हु मुक़ाबला पर निसंदेह आए, पहले बैअत ज़बरदस्ती की। फिर मुक़ाबले पर भी आए। अर्थात ज़बरदस्ती करवाई गई फिर बाद में जब अवसर मिला तो मतभेद भी हुआ, फिर जंग भी हुई लेकिन जब बात उनकी समझ में आ गई तो फिर वह छोड़ के मैदाने जंग से चले गए कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ठीक हैं। इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद और लिखते हैं। "आप वापस घर जा रहे थे तो किसी वहशी इन्सान ने जो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ौज में से कहलाता था रास्ते में जाते हुए उनको क़तल कर दिया और फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट इनाम की ख़ाहिश में आकर कहा कि मैं आप रज़ियल्लाहु अन्हु को खुशखबरी देता हूँ कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु का दुश्मन तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे हाथों मारा गया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मैं तुम को रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर से जहन्नुम की बशारत देता हूँ। मैंने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना था कि तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु को एक जहन्नुमी क़तल करेगा।

(ख़ुत्बाते महमूद भाग 26 पृष्ठ 385)

फिर एक और स्थान पर उसी घटना को वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं "हाकिम ने रिवायत की है कि सौरब बिन मज्ज़ा मुझ से वर्णन किया कि मैं जमल की घटना के दिन हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट से गुज़रा। उस समय उनकी नज़ा की हालत क़रीब थी।" जब उसने घायल किया उस वक़्त झगड़े की हालत थी "मुझ से पूछने लगे कि तुम कौन से गिरोह से हो? मैंने कहा कि हज़रत अमीरुल मौमेनीन अली रज़ियल्लाहु अन्हु की जमाअत में से हूं तो कहने लगे अच्छा अपना हाथ बढ़ाओ ताकि मैं तुम्हारे हाथ पर बैअत कर लूं। इसलिए उन्होंने मेरे हाथ पर बैअत की और फिर दिलो जान से स्वीकार किया। मैंने आकर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से समस्त घटना वर्णन कर दी। आप रज़ियल्लाहु अन्हु सुनकर कहने लगे अल्लाहु-अकबर ख़ुदा के रसूल की बात क्या सच्ची साबित हुई । अल्लाह तआला ने यही चाहा कि तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु मेरी बैअत के बग़ैर जन्नत में नहीं जाए ।

(आप रज़ियल्लाहु अन्हु अशरा मुबश्रा में से थे)

(अल्कोलुल फ़सल, अन्वारुल ऊलूम भाग 2 पृष्ठ 318-319)

पहले जबकि मजबूरी की बैअत थी लेकिन जैसा कि मैंने कहा वफ़ात से पूर्व पूर्ण शरह सदर से बैअत कर ली। नेकी थी, सआदत थी। अल्लाह तआला का जन्नत में ले जाने का वाअदा भी था इसलिए अल्लाह तआला ने नहीं चाहा कि ऐसा अंजाम हो कि जब आप ख़िलाफ़त की बैअत से बाहर हों और उस समय उनको अवसर मिला और ख़िलाफ़त की बैअत कर ली। यह क़िस्सा, यह घटनाओं अभी चल रहे हैं। इंशाअल्लाह आगे वर्णन करूँगा।

आज फिर मैं दुबारा अल-जज़ाइर के अहमदियों के लिए भी और पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी दुआ की तहरीक करना चाहता हूँ। अल्लाह तआला उनको महफ़ूज़ रखे। अल-जज़ाइर में भी हालात सख़्त किए जा रहे हैं। वहां भी एक सरकारी वकील है वह बार-बार हमारे अहमदियों पर मुक़द्दमे बना रहा है। पाकिस्तान में भी इसी प्रकार मुश्किलात में डाला जा रहा है। अल्लाह तआला इन सब लोगों को जो मुश्किलात खड़ी कर रहे हैं या किसी किस्म की मुख़ालिफ़त कर रहे हैं इबरत का निशान बनाए और जल्द उन अहमदियों के हालात ठीक फ़रमाए। जो जहां सख़्तियों में से गुज़र रहे हैं उनके लिए आसानीयां और सहूलतें पैदा करे।

लेकिन साथ ही मैं पाकिस्तान के अहमदियों को विशेषता यह भी कहूँगा कि दुआओं की ओर जिस प्रकार ध्यान देने की आवश्यकता है उस प्रकार ध्यान देने का अभी भी एहसास नहीं है। अत: पहले से बढ़कर और बहुत बढ़कर दुआओं की ओर ध्यान दें। अल्लाह तआला हमें जल्द उन मुश्किलात से निकाले और आसानीयां पैदा फ़रमाए और हम वास्तविक इस्लाम का पैग़ाम आज़ादी के साथ पाकिस्तान में भी और संसार के प्रत्येक कोने में भी पहुंचाने वाले हों।

नमाज़ों के बाद में कुछ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। पहला जनाज़ा डाक्टर ताहिर अहमद साहिब रब्वाह का है। यह चौधरी अबदूर्रज़्ज़ाक़ साहिब शहीद के बेटे थे जो साबिक़ अमीर ज़िला थे। 4 दिसंबर को साठ वर्ष की उम्र में हार्ट-अटैक की कारण से वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

यह सरकारी डाक्टर थे।1995 ई में उनको पहला हार्ट-अटैक हुआ था। सेहत की ख़राबी के बावजूद मट्ठी में अपना तबादला करवाया ताकि वक़्फ़े जदीद के अधीन अल-महदी हस्पताल में भी सेवा कर सकें। डाक्टर साहिब आई स्पैशलिस्ट थे और रोज़ाना शाम को और प्रत्येक इतवार को अल-महदी हस्पताल में आँखों के मरीज़ों का ईलाज करते रहते थे जो छुट्टी का दिन होता था वह महदी हस्पताल में आ जाते थे। बाक़ायदगी के साथ मैडीकल कैम्पों में शिरकत करते और कभी कबार सारा दिन ऑप्रेशनज़ में व्यस्त रहते। थरपारकर में न केवल अहबाब जमाअत बल्कि ग़ैर अज़ जमाअत लोगों में भी उनको बहुत पसंद किया जाता था। प्रत्येक के लिए प्रिय थे। दिल का बाईपास ऑप्रेशन भी हुआ था और आख़िरी वर्षों में दो तीन बार शदीद कष्ट में भी ग्रस्त हुए लेकिन थरपारकर में काम जारी रखा। मट्ठी में तक़रीबन पंद्रह वर्ष उन्होंने इन्सानियत की सेवा में गुज़ारे। अत्यधिक गरीबों का ख्याल रखने वाले और मेहमान नवाज़ इन्सान थे। ख़िलाफ़त और जमाअत के निज़ाम का बहुत अधिक सम्मान करने वाले थे। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जवानी में ही वसीयत के निज़ाम में शामिल हुए। प्रत्येक माली तहरीक में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे। अल्लाह तआला मरहूम से रहम और मग़फ़िरत का व्यवहार फ़रमाए, दर्जात बुलंद करे और उनके बच्चों को भी उनकी नेकियों पर चलने और उनको स्थापित रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा हबीबुल्लाह मज़हर साहिब पुत्र चौधरी अल्लाह दत्ता साहिब का है। हबीबुल्लाह मज़हर साहिब जेल में अल्लाह के लिए कैद भी रह चुके थे। 24 अक्तूबर को 75 वर्ष की उम्र में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलैहि राजेऊन।

उनके पिता हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ पर बैअत कर के अहमदियत में शामिल हुए थे। चौधरी हबीबुल्लाह मज़हर साहिब सरकारी विभागों में विभिन्न पदों में काम करते रहे और हुकूमत के एक विभाग से बतौर डायरेक्टर रिटायर्ड हुए थे। जमाअत की सेवाएं आपकी पच्चास वर्ष से अधिक समय पर आधारित हैं जिन में आप को क़ायद मज्लिस से लेकर ज़ईम अन्सारुल्लाह और विभिन्न जमाअत के पदों और सदर जमाअत इत्यादि की सेवाओं की भी तौफ़ीक़ मिली। तौहीन रिसालत के कानून 295 के अधीन मौत की सज़ा का पहला मुक़द्दमा जो किसी भी अहमदी पर दर्ज हुआ वह श्रीमान चौधरी हबीबुल्लाह मज़हर साहिब पर था जो 29 अक्तूबर 1991 ई को थाना शाहदरा में दर्ज हुआ। इस प्रकार आप तारीख़ी लिहाज़ से पहले अहमदी थे जिन को इस क़ानून के तहत जेल में ख़ुदा के लिए कैद रह कर कष्ट बर्दाश्त करने की तौफ़ीक़ हासिल हुई। जबकि सैशन कोर्ट ने आपके हक़ में फ़ैसला किया लेकिन मुख़ालिफ़ीन की हाईकोर्ट में अपील पर हाईकोर्ट के जस्टिस अब्दुल मजीद ने तौहीन रिसालत के इस मुक़द्दमे में आपकी ज़मानत अस्वीकार कर दी और आपको सज़ा दिलवाने के लिए उस समय मुख़ालिफ़ीन की जो भी कोशिश हो सकती थी उन्होंने बड़े व्यापक स्तर पर कोशिश की। अंग्रेज़ी में और उर्दू में पेम्फ़लेट बांटे और बड़े ग़लत किस्म के शब्द आपके बारे में प्रयोग किए। बहरहाल चौधरी हबीबुल्लाह साहिब बहुत साहसी और बहादुरी से इस समय में ख़ुदा की इच्छा पर प्रसन्न रहते हुए क़ैद के कष्ट बर्दाश्त करते रहे और फिर अल्लाह तआला ने ऐसे सामान पैदा फ़रमाए कि कुछ ही माह में आपकी रिहाई के सामान भी पैदा कर दिए। आप बिलानाग़ा तहज्जुद और पांच समय नमाज़ों के पाबंद थे। आख़िर दम तक बच्चों को नमाज़ पर स्थापित रहने की तलक़ीन करते रहते थे। निहायत मिलनसार, ग़मगुसार, आजिज़, ख़िलाफ़त के शैदाई और आशिक़ थे। ख़ुत्बों और खिताबों को बड़ी बाक़ायदगी से सुनते थे बल्कि समस्त घर वालों को इकट्ठा कर के कहते थे सब काम छोड़ दो और यहां बैठ कर ख़ुत्बा के समय में ख़ुत्बा सुनो और अपनी मौजूदगी में सबको सुनवाते थे। अल्लाह के फ़ज़ल से मूसी और 9/1 हिस्से की वसीयत की हुई थी। उनके पीछे रहने वालो में पत्नी रुक़य्या बेग़म साहिबा के अतिरिक्त पाँच बेटे और एक बेटी शामिल हैं। उनके एक बेटे हसीब अहमद साहिब मुरब्बी सिल्सिला हैं और अंग्रेज़ी डैसक फ़ज़ल उम्र फ़ाउंडेशन में काम कर रहे हैं। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का व्यवहार फ़रमाए। उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

अगला जनाज़ा श्रीमान बशीरुद्दीन अहमद साहिब का है। ख़लीफ़ा बशीरुद्दीन अहमद 30 नवंबर को 86 वर्ष की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना ईलैहि राजेऊन।

हिन्दुस्तान के शहर फ़िरोज़पूर में यह पैदा हुए थे। आप डाक्टर ख़लीफ़ा तक़ीउद्दीन साहिब के बेटे थे और हज़रत डाक्टर ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहिब के पोते थे। डाक्टर ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहिब हज़रत उम्मे नासिर जो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की प्रथम पत्नी थीं उनके पिता थे। हज़रत ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहिब के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने उनकी माली क़ुर्बानियों के बारे में बड़े प्रशंसा वाले शब्द कहे हैं। बहरहाल यह उनके वंश में से थे। जमाअत के कामों में भी हिस्सा लेते थे। ग़ैर अहमदियों को अपने घर बुला कर तब्लीग़ करते थे। विभिन्न जगहों पर रहते रहे फिर 1998 ई में स्वीडन वापस चले गए जहां 1999 ई में उनको दिल का दौरा पड़ा। सेहत वाले हुए तो फिर मस्जिद की सरगर्मीयों में व्यस्त रहे। तब्लीग़ के सेक्रेटरी भी रहे। प्रत्येक वर्ष यहां जलसा पर यूके में अपनी पत्नी के साथ बच्चों के साथ आते थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त तीन बेटियां और दो बेटे शामिल हैं। आपकी पत्नी एक अंग्रेज़ थीं। ईसाई से अहमदी हुई थीं लेकिन बहुत शर्म वाला लिबास पहनने वाली और पर्दे की पाबंद हैं। निहायत सादगी से ज़िन्दगी गुज़ारने वाली हैं। उनको धर्म का ज्ञान हासिल करने का शौक़ भी है और इस पर अमल करने की पूरी पूरी कोशिश भी करती हैं। अल्लाह तआला उनके ईमान और ईक़ान को भी तरक़्क़ी दे और उनकी औलाद को भी उनकी नेकियों पर चलने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। अल्लाह तआला मरहूम से रहम और मग़फ़िरत का व्यवहार फ़रमाए।

अगला जनाज़ा श्रीमती अमीना अहमद साहिबा का है जो ख़लीफ़ा रफ़ी उद्दीन अहमद साहिब की पत्नी थीं। 19 अक्तूबर को वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

गयाना से उनका सम्बन्ध था। 1940 ई में उनका जन्म गयाना के प्रसिद्ध मुस्लिम कारोबारी घराने में हुआ था। लंदन में अपने तालिब इलमी के ज़माने में उन्होंने अहमदियत स्वीकार की और इसी दौरान फिर आपकी शादी आरडी अहमद साहिब मरहूम से हुई जो डाक्टर ख़लीफ़ा तक़ी उद्दीन के बेटे थे। हज़रत ख़लीफ़ा रशीद उद्दीन साहिब की नस्ल में से थे। मरहूमा एक हमदर्द और लोगों की देख-भाल करने वाली और मेहमान नवाज़ महिला थीं। नमाज़ों की पाबंद थीं। आपको हमेशा अपनी नमाज़ों की फ़िक्र रहा करती थी। तबीयत ख़राब होने के अतिरिक्त तहज्जुद अदा किया करती थीं। क़ुरआन करीम की तिलावत बाक़ायदगी से करती थीं। ख़राबी सेहत और कैंसर के अतिरिक्त बर्तानिया में लगभग प्रत्येक जलसा में शरीक हुईं। दुआओं पर बहुत अधिक विश्वास था। ख़िलाफ़त से इख़लास और वफ़ा का सम्बन्ध था। हमेशा जब भी मुझे मिलती थीं विशेषता बड़ी आजिज़ी से मिलती थीं, दुआ के लिए कहती थीं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का व्यवहार फ़रमाए और उनकी औलाद को भी जमाअत से मज़बूत सम्बन्ध स्थापित रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 7 अगस्त 2020 पृष्ठ 5 से 10)

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 28 January, 4 February 2021 Issue No.4-5

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 1 का शेष

गुनाहों से तौबा करके उसके समक्ष हाज़िर होते हैं।

तुम याद रखो कि यदि अल्लाह तआला के फ़रमान मैं तुम अपने आप को लगाओगे और उसके धर्म के समर्थन में कोशिश करने वाले हो जाओगे तो ख़ुदा समस्त रुकावटों को दूर कर देगा और तुम कामयाब हो जाओगे। क्या तुमने नहीं देखा कि किसान उत्तम पौधों की लिए खेत में से नाकारा चीज़ों को उखाड़ कर फेंक देता है और अपने खेत को सुन्दर वृक्षों और फलदार पौधों से सजाता और उनकी सुरक्षा करता और हर एक हानि और नुक़्सान से उनको बचाता है,परन्तु वे दरख़्त और पौधे जो फल न लाएं और गलने और ख़ुशक होने लग जाएं उन की मालिक परवाह नहीं करता कि कोई मवेशी आकर उनको खा जाए या कोई लकड़हारा उनको काट कर तंदूर में फेंक देए। अत: ऐसा ही तुम भी याद रखो। यदि तुम अल्लाह तआला के हुज़ूर में सच्चे ठहरोगे तो किसी का विरोध तुम्हें तकलीफ़ न देगी। पर यदि तुम अपनी हालतों को ठीक न करो और अल्लाह तआला से आज्ञापालन का एक सच्चा वादा न बाँधो तो फिर अल्लाह तआला को किसी की परवाह नहीं। हज़ारों भेड़ें और बकरियां रोज़ ज़िब्ह होती है पर उन पर कोई रहम नहीं करता और यदि एक आदमी मारा जाए तो इतनी पूछताछ होती है। अत: यदि तुम अपने आपको दरिंदों की तरह बेकार और लापरवाह बनाओगे,तो तुम्हारा भी ऐसा ही हाल होगा। चाहिए कि तुम ख़ुदा के प्रियों में शामिल हो जाओ ताकि किसी महामारी या आफ़त को तुम पर हाथ डालने का साहस न हो सके,क्योंकि कोई बात भी अल्लाह तआला की आज्ञा के बिना ज़मीन पर हो नहीं सकती। हर एक आपस के झगड़े और जोश और शत्रुता को बीच में से उठा दो कि अब वह वक़्त है कि तुम छोटी बातों से दूरी करके प्रमुख और महान कामों में व्यस्त हो जाओ। लोग तुम्हारा विरोध करेंगे और अंजुमन के मैंबर तुम पर नाराज़ होंगे। पर तुम उनको नर्मी से समझाओ और जोश को हरगिज़ काम में न लाओ। यह मेरी वसीयत है। और इस बात को वसीयत के तौर पर याद रखो कि हरगिज़ तेज़ी और सख़्ती से काम न लेना बल्कि नर्मी और धीरे से और आचरण से हर एक को समझाओ और अंजुमन के मैंबरों को ज़हन नशीन कराओ कि ऐसा मैमोरियल वास्तव में धर्म को एक हानि देने वाली बात है और इसी लिए हमने उसका विरोध किया कि धर्म को सदमा पहुंचता है।

25 जुलाई 1898 ई गालियों का उत्तम उत्तर

मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी ने अपने रिसाला इशाअतुस्सुन्ना नम्बर 5 लग़ाएत दो अज़ दहम जलद हज़ दहम बाबत 1895 ई बदसत मुहम्मद पुत्र चोग़ता क़ौम ऐवान निवासी हमों गखड़ ज़िला स्यालकोट भेजा। जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम पर बहुत अनुचित हमले किए गए थे। आप ने 25 जुलाई 1898 ई के सेह पहर को असल खच के पहले पृष्ठ के ऊपर पर निम्नलिखित पंक्ति लिख कर डाकिया को दे दी।

"رَبِّ اِنْ کَانَ ھٰذَا الرَّجُلُ صَادِقًا فِیْ قَوْلِہٖ فَاَکْرِمْہُ وَاِنْ کَانَ کَاذِبًا فَخُذْہُ۔"

1 अगस्त 1898 ई

सुबह की नमाज़ के बाद हज़रत अक़दस ने फ़रमाया ख़्वाब में हाथ से दाँत का गिराना भयावह होता है।

"मैंने ख़्वाब में देखा कि एक दाढ़ का हिस्सा जो पुराना हो गया है इस को मैं ने मुँह से निकाला और वह बहुत साफ़ था और उसे हाथ में रखा।" फिर फ़रमाया कि

"ख़्वाब में दाँत यदि हाथ से गिराया जाए तो वो डराने वाला होता है वर्ना मुब-श्शिर।"

इस के बाद मुहम्मद सादिक़ ने अपने दो ख़्वाब सुनाए। जिनमें से एक में नूर के कपड़ों का मिलना और दूसरे में हज़रत अक़दस के दिए हुए निबन्ध का अच्छी तरह नक़ल करना था। जिसकी ताबीर हज़रत अक़दस ने उद्देश्यों में सफलता फ़रमाई।

अल्लाह के समर्थन से निबन्धों का दिल पर नुज़ूल

इसके बाद हज़रत अक़दस ने फ़रमाया कि अल्लाह के समर्थन एक तो स्पष्ट तथा खुले रूप में प्रकट होते हैं और आम लोग उनको देख सकते हैं परन्तु कई छुपे हुए समर्थन ऐसे होते हैं जिन के लिए मेरी समझ में कोई नियम नहीं आता कि जन साधारण को कैसे दिखा सकूं। जैसे यही अरबी पुस्तक है। मैं ख़ूब जानता हूँ कि अरबी अदब में मुझे कहाँ तक पकड़ है परन्तु जब मैं लिखने का सिल्सिला शुरू करता हूँ तो एक के बाद दूसरा अपने अपने अवसर और स्थान पर उचित रूप पर आने वाले शब्द अवतरित होते जाते हैं। अब कोई बतलाए कि हम कैसे इस अल्लाह तआला के समर्थनों को दिखा सकें कि वे क्योंकर दिल पर शब्द अवतरित करता है। और देखो इस "अय्यामुस्सलह" में प्राय विषय ऐसे आए हैं जिनका मेरी पहली पुस्तकों में नाम तक नहीं और अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि इससे पहले वे कभी ज़ेहन में न आए थे,परन्तु अब वे ऐसे तौर पर आकर दिल पर नाज़िल हुए हैं कि समझ में नहीं आ सकता, जब तक ख़ुद अल्लाह तआला का समर्थन शामिल हो कर उसको इस योग्य न बना दे और यह ख़ुदा तआला का फ़ज़ल है जो वह ऐसे बंदों पर करता है जिनसे कोई काम लेना होता है। यह भी एक सच्ची बात है कि पुस्तकों के लिए जब तक सेहत और फ़राग़त न हो यह काम नहीं हो सकता और यह ख़ुदा तआला का फ़ज़ल उन लोगों ही को मिलता है जिनसे वह कोई काम लेना चाहता है। फिर उनको यह सब सामान जो रचना के लिए ज़रूरी होते हैं एक स्थान पर जमा कर देता है।

माध्यमों का ध्यान रखना

जनाब मौलाना मौलवी नूरुद्दीन साहिब रज़ी अल्लाह अन्हो की तबीयत 31 जुलाई 1898 ई से पेट दर्द की कारण ख़राब थी तो हज़रत अकदस ने आदमी भेज कर ख़बर पता करवाई और ठीक होने की ख़बर सुनकर अल्हम्दो लिल्लाह फ़रमाया। और फ़रमाया

"मौलवी साहिब की आयु अब पतन की है,इस लिए बड़ी सावधानी की ज़रूरत है मानो फूंक फूंक कर क़दम रखना चाहिए। ज़िन्दगी और मौत तो अल्लाह तआला के हाथ में है परन्तु इन्सान को यह भी उचित नहीं कि वह माध्यमों का रियाइत ना रखे

फिर फ़रमाया कि वास्तव में पतन का ज़माना 30 साल के बाद से शुरू हो जाता है। सीमा से बढ़ना तथा कम रहना इस आयु में अच्छा नहीं होता। मैंने कई आदमी देखे हैं कि गुना नपा आटा देते और पानी भी अंदाज़े और वज़न के साथ खाते पीते हैं और कई यहां तक बढ़ जाते हैं कि उनको किसी किस्म का अंदाज़ा ही नहीं रहता। ये दोनों बातें ठीक नहीं जैसा मैंने कहा, जवानी का ज़माना तीस ही साल तक है और यह भी इस अवस्था में कि अंग मज़बूत और तंदरुस्त हों वर्ना कई तो आरम्भ ही में बूढ़ों से मिलते जुलते हैं।

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

तरीक़ा ईलाज।

वे लोग जो क़ौमी तरक़्क़ी के लिए या तो उमंग ही न रखते थे या ये समझते थे कि ख़ारिजी ईलाज के बिना कुछ नहीं बन सकता जब उनमें से उनके भाई ने दावा किया कि मैं ही तुम्हारा ईलाज करूँगा और तरक़्क़ी की तरफ़ ले जाऊँगा तो उनकी हैरत की सीमा न रही। वे हैरान हो गए कि जो बात असंभव थी उसे मुम्किन करने का उसने क्योंकर दावा कर लिया।

दूसरी बात जो उन के लिए हैरत वाली बन गई यह थी कि इस मुद्दई का दावा है कि मुझे लोगों को होशियार करने का आदेश दिया गया है। अर्थात कुछ पुरानी बातों को छोड़ दो और कुछ नई बातों को धारण करो। ऐसे लोगों के लिए हमेशा यह बात आश्चर्य योग्य हुआ करती है कि रसूल कहते हैं कि वर्तमान निज़ाम को तोड़ दो और नया निज़ाम धारण करो।

कुफ़्फ़ार की ये दोनों बातें विपरीत हैं। एक तरफ़ तो उनमें इतनी निराशी है कि वे समझते हैं कि हमारे इलाज के लिए हम में से कोई नहीं आ सकता और दूसरी तरफ़ वह इस बात पर लड़ते हैं कि हमारा निज़ाम क्यों बदलते हो। यह गिरी हुई क़ौमों की अवस्था होती है। वह चाहती हैं कि न कुछ छोड़ना पड़े और न कुछ करना पड़े। एक व्यक्ति बाहर से आकर उनके वर्तमान निज़ाम को स्थापित रखते हुए उन्हें तरक़्क़ी की तरफ़ ले जाए। उन्हें न शिक्षा हासिल करनी पड़े न मेहनत करनी पड़े न बुरी बातों को छोड़ना पड़े। परन्तु एक व्यक्ति बाहर से आए और दूसरों को मार दे और सब कुछ उन्हें प्राप्त हो जाए। वे ये नहीं ख़्याल करते कि अगर उनका पहला निज़ाम ठीक होता तो अपमान और पतन में वे पड़ते ही क्यों? अत: उनका मौजूदा निज़ाम तोड़ कर ही काम चल सकेगा।

(तफ़सीर कबीर ,भाग 3 पृष्ठ 16 प्रकाशन कादियान 2010 ई)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad